ऋग्वेद यजुर्वेद

ओ३म्

नव वर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

पवमान

(मासिक)

मूल्य: ₹ 15 (मासिक)
₹ 150 (वार्षिक)

वर्ष : 28 चैत्र-बैशाख एवं बैशाख-ज्येष्ठ वि0स0 2073 अप्रैल-मई 2016 अंक : 04-05

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून वजन: 50 ग्राम

ग्रीष्मोत्सव 2016 के मुख्य अतिथि
आचार्य देवव्रत जी
महामहिम राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश

वैदिक साधन आश्रम तपोवन,
नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

संपादक मण्डल

आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य
(सम्पादक)

श्री मनमोहन आर्य जी
(सम्पादक)

श्री कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री
(प्रधान सम्पादक)

ओ३म्

पवमान

वर्ष–28 अंक–4–5

चैत्र–वैशाख एव वैशाख ज्येष्ठ 2073 विक्रमी अप्रैल–मई 2016

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,117 दयानन्दाब्द : 192

★

–: संरक्षक :–

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

★

–: अध्यक्ष :–

श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री

मो. : 09810033799

★

–: सचिव :–

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 08755696028

★

–: सम्पादक मण्डल :–

अवैतनिक

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य

मनमोहन कुमार आर्य

★

–: कार्यालय :–

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून–248008

दूरभाष : 0135–2787001

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	3
भारतीय संस्कृति के संरक्षण......	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	4
महर्षि दयानन्द की मानव कल्याण....	मनमोहन कुमार आर्य	8
आर्य समाज का उद्देश्य	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	11
गोपालन से अद्भुत लाभ	योगाचार्य ओमप्रकाश मस्करा	16
आर्य समाज का कर्त्तव्य कर्म	स्वामी स्वतंत्रतानन्द	17
भारतीय स्वतन्त्रता को आर्य समाज....	राजधर्म से साभार	19
Scientific Experimental...	Acharya Ashish	23
वैदिक साधन आश्रम तपोवन	मनमोहन कुमार आर्य	26
तपोवन आश्रम मेरी दृष्टि में	नन्द किशोर अरोड़ा	29
हरिद्वार अर्द्धकुम्भ.....	मनमोहन कुमार आर्य	31
मधुमेह में असरदारी फूल–पत्तियां	डॉ० अजीत मेहता	35
युवाओं हेतु दिव्य जीवन निर्माण शिविर		39
दानदाताओं की सूची		40

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1. कलर्ड फुल पेज — रु. 5000/– प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज — रु. 2000/– प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज — रु. 1000/– प्रति माह

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

आर्यसमाज का उद्देश्य

आर्य शब्द की व्युत्पत्ति 'ऋ गतिप्रापणयोः' धातु से होती है। महर्षि ने आर्य शब्द को परिभाषित करते हुए कहा है कि जो श्रेष्ठ स्वभाव, धर्मात्मा, परोपकारी, सत्य–विद्यादि गुणयुक्त और आर्यावर्त्त देश में सब दिन रहने वाले हैं, उनको आर्य कहते हैं। सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में महर्षि ने धार्मिक, विद्वान्, देव और आप्त पुरुषों का नाम आर्य बताया है। अथर्ववेद के एक मंत्र (१६.६२.१) की व्याख्या में महर्षि कहते हैं कि वे ही आर्य हैं जो उत्तम विद्या आदि के प्रचार से सबके उत्तम भोग की सिद्धि और अधर्मी दुष्टों के निवारण के लिए निरन्तर यत्न करते हैं। महाभारत के उद्योग पर्व के अनुसार 'शान्तिप्रिय, लोगों से कभी वैर न करने वाला, कभी घमण्ड न करने वाला, जो कभी पतित नहीं होता और न ही कभी अपने को हीन समझ कर दुष्कार्य करता है, उस श्रेष्ठ स्वभाव वाले को आर्य कहते हैं। जो केवल अपने ही सुख में प्रसन्न नहीं होता और न ही दूसरों के दुःख को देखकर खुश होता है और दान करके पश्चाताप नहीं करता, वह आर्य है। वेदव्यासजी ने महाभारत में कहा है कि ज्ञानी, सन्तोषी, संयमी, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, दाता, दयालु और ईश्वर की आज्ञा पर चलने वाला आर्य कहलाता है। इस संगठन की स्थापना १० अप्रैल, १८७५ को संसार में आस्तिक्य भाव को फैलाने के लिए सज्जन लोगों के एक संघ के रूप में की गई थी। आर्यसमाज के उद्देश्यों को इसके नियमों के आधार पर जाना जा सकता है। प्रथम तीन नियमों से पता चलता है कि इसके मानने वाले आस्तिक, एकेश्वरवादी और परमेश्वर के नित्य अनादि ज्ञान को मानते हैं। पहले पांच नियमों में सत्य पर बहुत बल दिया गया है। इसके चौथे नियम में सदाचरण पर बल दिया गया है। आर्यसमाज के शेष पांच नियम व्यक्ति के सामाजिक और व्यक्तिगत कर्त्तव्यों का बोध करवाते हैं। आर्यसमाज की विचारधारा यह मानती है कि अच्छे और उन्नत समाज के बिना व्यक्ति का विकास सम्भव नहीं है। आर्यसमाज जन्मना जातिवाद का विरोध करता है और मानता है कि वर्णाश्रम धर्म पर चलना मनुष्य का कर्त्तव्य है। यह मानता है कि स्त्रियों और सभी वर्णो के व्यक्तियों को वेद के पढ़ने–पढ़ाने का अधिकार है। इसकी मान्यता है कि ईश्वर से भिन्न जड़, स्थल, मनुष्य, पशु, पक्षी, नदी, पर्वत, चांद–सूरज और सितारों आदि की पूजा पाप है। आर्यसमाज प्राचीन ऋषियों की इस मान्यता में अटल आस्था रखता है कि परमेश्वर ने सृष्टि की उत्पत्ति जीवों के भोग के लिए की है। वेद का ज्ञान सृष्टि के आदि में चार ऋषियों को दिया गया और भाषा का आविर्भाव भी परमात्मा द्वारा सृष्टि के आरम्भ में किया गया है। वेदोक्त धर्म पौराणिक मिथकों और रूढ़ियों से विकृत हो गया है। आर्यसमाज का उद्देश्य अज्ञान, अंधकार और आडम्बर को मिटाकर ज्ञान और वेद का प्रकाश फैला कर विश्व को श्रेष्ठ पुरुषों से युक्त कर आर्य बनाना है। आर्यसमाज के आन्दोलन को सही दिशा प्रदान करने हेतु सभी प्रयत्न करें, तभी सही अर्थों में '**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**' अर्थात् विश्व के सभी लोगों को श्रेष्ठ बनाने के उद्देश्य में हम सफल हो सकेंगे। आर्यसमाज के स्थापना दिवस के अवसर पर यह विशेषांक सुधि पाठकों की सेवा में समर्पित है। नव वर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनायें।

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

❀ वेदामृत ❀

प्रभु हमारे भीतर वैदिक सत्य को जाग्रत् कर दें

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि।
स इद् देवेषु गच्छति।। ऋ० 1/1/4

ऋषिः–मधुच्छन्दाः।। देवता–अग्निः।। छन्दः–गायत्री।।

विनय– हम कई शुभ अभिलाषाओं से कुछ यज्ञों को प्रारम्भ करते हैं और चाहते हैं कि यज्ञ सफल हो जाएँ, परन्तु हे देवों के देव अग्निदेव ! कोई भी यज्ञ तबतक सफल नहीं हो सकता जबतक उस यज्ञ में तुम पूरी तरह न व्याप रहे हो, चूँकि जगत् में तुम्हारे अटल नियमों व तुम्हारी दिव्य शक्तियों के, अर्थात् देवों के द्वारा ही सब–कुछ सम्पन्न होता है। तुम्हारे बिना हमारा कोई यज्ञ कैसे सफल हो सकता है? और जिस यज्ञ में तुम व्याप्त हो वह यज्ञ अध्वर (ध्वर अर्थात् कुटिलता और हिंसा से रहित) तो अवश्य होना चाहिए, पर जब हम यज्ञ प्रारम्भ करते हैं, कोई शुभ कर्म करते हैं, किसी संघ–संगठन में लगते हैं, परोपकार का कार्य करने लगते हैं तो मोहवश तुम्हें भूल जाते हैं। उसकी जल्दी सफलता के लिए हिंसा और कुटिलता से भी काम लेने को उतारू हो जाते हैं। तभी तुम्हारा हाथ हमारे ऊपर से उठ जाता है। ऐसा यज्ञ तुम्हारे देवों को स्वीकृत नहीं होता, उन्हें नहीं पहुँचता–सफल नहीं होता है। हे प्रभो ! अब जब कभी हम निर्बलता के वश अपने यज्ञों में कुटिलता व हिंसा का प्रवेश करने लगें और तुझे भूल जाएँ तो हे प्रकाशक देव ! हमारे अन्तरात्मा में एक बार इस वैदिक सत्य को जगा देना; हमारा अन्तरात्मा बोल उठे कि "हे अग्न! जिस कुटिलता व हिंसा–रहित यज्ञ को तुम सब ओर से घेर लेते हो, व्याप लेते हो, केवल यही यज्ञ देवों में पहुँचता है, अर्थात् दिव्य फल लाता है–सफल होता है।' सचमुच तुम्हें भुलाकर, तुम्हें हटाकर यदि किसी संगठन–शक्ति द्वारा कुटिलता व हिंसा के जोर पर कुछ करना चाहेंगे तो चाहे कितना घोर उद्योग करें पर हमें कभी सफलता न मिलेगी।

शब्दार्थ–अग्ने=हे परमात्मन्! **त्वम्**=तुम **यम्**=जिस **अध्वरं यज्ञम्**=कुटिलता तथा हिंसा से रहित यज्ञ को **विश्वतः परि भूः असि**=सब ओर से व्याप लेते हो **स इत्**=केवल वही यज्ञ **देवेषु गच्छति**=दिव्य फल लाता है।

वैदिक विनय से साभार

भारतीय संस्कृति के संरक्षण में महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की भूमिका

–कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

संस्कृति शब्द बहुप्रचलित ही नहीं अपितु बहुआयामी भी है। इतिहास, साहित्य, धर्म–दर्शन, राजनीति–विज्ञान, समाज शास्त्र, नीति शास्त्र, मानव शास्त्र, मनोविज्ञान और शिक्षा शास्त्र में संस्कृति की व्याख्या करने का प्रयास किया है परन्तु ये सभी शास्त्र एक सर्वसम्मत व्याख्या करने में असफल रहे हैं। यह अवश्य है कि इन समस्त शास्त्रों के द्वारा दी गई परिभाषाओं के आधार पर हम यह समझ सकते हैं कि संस्कृति के वाहक तत्त्व धर्म, दर्शन, इतिहास, कला और सभ्यता सामुदायिक मानव जीवन जीने के लिए उपयोगी आधार हैं। यह मनुष्य समाज में अपनी परम्पराओं के साथ अपने को सम्बद्ध करती है। संस्कृति मनुष्य की सामुदायिक विशिष्टता है जो विचार, मूल्य या धारणा के रूप में पहचानी जा सकती है। संस्कृति मानव के अन्तर और वाह्य दोनों रूपों का संस्कार करती है और मनुष्य को आन्तरिक रूप से अनुशासित करने की शक्ति देती है। इसके द्वारा मनुष्य को अपने जीवन के रचनात्मक संतोष के साधन उपलब्ध होते हैं। संस्कृति जड़ और स्थिर नहीं होती है, अपितु इसकी विशिष्टता इसकी गतिशीलता में है और यह मानव के अन्दर के देवत्व को जगाने की प्रक्रिया है।

संस्कृति और सभ्यता

संस्कृति और सभ्यता को प्रायः हम समानार्थी समझते हैं। वस्तुतः इन दोनों की संरचना, गठन और स्वरूप में बहुत सूक्ष्म अन्तर है। पाश्चात्य विद्वानों में काण्ट ने संस्कृति और सभ्यता में अन्तर माना है। इसी प्रकार श्लेगर ने भी दोनों को भिन्न–भिन्न ही नहीं अपितु विरोधी रूप में संकल्पित किया है। विचारोपरान्त हम यह पाते हैं कि संस्कृति आन्तरिक संस्कार पर जोर देती है और यह मान कर चलती है कि आन्तरिक संस्कार प्राप्त हो जाने पर वाह्य आचरण स्वयं ही संस्कारित हो जाएगा, जबकि सभ्यता ऐहिक लक्ष्यों की पूर्ति से सम्बन्धित है।

अब हम भारतीय संस्कृति क संरक्षण में महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज की भूमिका पर विचार करते हैं–

विद्याध्ययन समाप्त होने के बाद स्वामी विरजानन्द ने अपने शिष्य दयानन्द को अपना जीवन देश को समर्पित करते हुए उपकार करने, सत शास्त्रो का उद्धार करने, अविद्या को मिटाने और वैदिक धर्म फैलाने का आदेश दिया। अपने गुरु को दिए हुए वचनों का पालन करते हुए, वे अपने कर्तव्य पथ पर चल पड़े। अप्रैल 1867 में कुम्भ के मेले से उन्होंने समाज सुधार का कार्य आरम्भ किया। समाज में व्याप्त पाखण्ड, अन्धविश्वास, कुरीतियों, गुरुडम, आडम्बर, जातिवाद, सतीप्रथा, बालविवाह आदि कुप्रथाओं के विरुद्ध उन्होंने सारे देश के भिन्न–भिन्न स्थानों में घूमघूम कर घोर प्रचार करते हुए आवाज

सौजन्य से– **RIKKI PLASTIC (PVT.) LTD.**
(ISO/TS 16949:2002 Registered)
Plot No. B-5, Sector-59, Opp. JCB India Ltd., Ballabgarh, Faridabad, Haryana (INDIA)
Tele : 0129-4154941-42, Telefax : 0129-4154950

बुलन्द की। अपने विचारों को महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश नामक अपने कालजयी ग्रन्थ मे उल्लिखित किया और 10 अपैल, 1875 को इस उद्देश्य से उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। स्वामी दयानन्द की यह एक बड़ी देन है कि भूले हुए वेदों का उन्होंने फिर से परिचय कराया और वेदों के ज्ञान को समस्त भारतवासियों की विद्या का मूल कारण बताया। उन्होंने न केवल वेदों का भाष्य किया अपितु ऋग्वेदादिभाष्य–भूमिका, आर्याभिविनय, संस्कारविधि आदि अनेक ग्रन्थ लिखे। महर्षि के हृदय में मातृभूमि का सर्वोपरि स्थान था और देश प्रेम की भावना उनमें कूटकूट कर भरी हुई थी। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में वे लिखते हैं कि ''यह आर्यावर्त्त देश ऐसा है, जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसीलिए इस भूमि का नाम सुवर्णभूमि है, क्योंकि यही सुवर्ण आदि रत्नों को उत्पन्न करती हैं।'' महर्षि भारत को सब प्रकार से सम्पन्न देश बनाकर इस का उत्थान करना चाहते थे। उनका लक्ष्य देश को अतीत का गौरव प्राप्त कराकर सुदृढ़ और सुसंस्कृत राष्ट्र बनाना था। राष्ट्र की रक्षा के लिए वे पांच 'स्वकार' अनिवार्य मानते थे।

1. **स्वसाहित्य**– महर्षि की स्वसाहित्य में अटूट आस्था थी। वे वैदिक वाङ्मय के अंगभूत ग्रंथों को ही साहित्य का मूलाधार मानते थे। इन्हें वे आर्ष ग्रंथ कहते थे। उनके अनुसार वेद, वेदांग, स्मृति, दर्शन, रामायण और महाभारत हमारे स्वसाहित्य के अनमोल रत्न हैं।

2. **स्वभाषा**– दयानन्द पहले भारतीय विचारक थे जिन्होंने यह अनुभव किया कि भारत को एक राष्ट्रभाषा की आवश्यकता है। इसलिए मातृभाषा गुजराती होते हुए भी उन्होंने सभी पुस्तकें हिन्दी में लिखकर हिन्दी को मातृभाषा के रूप में विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। वे संस्कृत को विश्व की सभी भाषाओं की जननी मानते थे और उसके अधिकारी विद्वान व प्रचारक हुए। इसके लिए उन्होंने वेदाङ् प्रकाश नाम से संस्कृत व्याकरण के अनेक ग्रन्थ भी लिखे हैं। वह प्रचार आरम्भ करने के समय से ही संस्कृत में व्याख्यान देते थे जो सरल सुबोध व मुहावरेदार होती थी। जिसे संस्कृत न जानने वाले लोग भी समझ लेते थे। वे पहले संस्कृत में ही वार्तालाप करते थे। बाद में उन्होंने हिन्दी भाषा को अपनाया और इसे आर्यभाषा का नाम दिया। बहुत कम समय में आपने हिन्दी सीख ली और हिन्दी में ही व्याख्यान, वार्तालाप व लेखन कार्य करने लगे। हिन्दी के प्रचार व प्रसार के लिए आपने अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी में ही लिखे व प्रकाशित किये। आपने अपने ग्रन्थों का उर्दू आदि भाषाओं में अनुवाद करने की अनुमति इस कारण नहीं दी कि इससे हिन्दी के प्रचार व प्रसार पर विपरीत प्रभाव हो सकता था। **इस सन्दर्भ में उन्होंने यहां तक कह दिया था कि जो व्यक्ति इस देश में उत्पन्न होकर और यहां का अन्न आदि खा कर यहां की सरल भाषा हिन्दी को नहीं सीख सकता उससे देश के हित के लिए और क्या उम्मीद की जा सकती है?** भारत के सरकारी दफ्तरों में काम काज की भाषा तय करने के लिए अंग्रेजों ने जब एक कमीशन बनाया तो हिन्दी को सरकारी कामकाज की भाषा स्वीकार कराने के लिए स्वामी दयानन्द जी ने देश भर में एक हस्ताक्षर अभियान चलाया और उस पर करोड़ो लोगों के हस्ताक्षर कराये। हस्ताक्षर अभियान चलाकर सरकार से अपनी बात स्वीकार कराने वाले शायद स्वामी दयानन्द भारत के प्रथम महापुरुष थे।

3. **स्वधर्म**– महर्षि दयानन्द की स्वधर्म पर

अटूट श्रद्धा थी। उनके अनुसार भारत का प्राचीनतम धर्म वैदिक धर्म है। यह पूर्णरुप से आस्तिक भाव लिए हुए एकेश्वरवादी है। वैदिक धर्म के अनुसार परमेश्वर किसी मठ मन्दिर, गिरजाघर या गुरद्वारे में बन्द नहीं है, अपितु वह सर्वत्र विद्यमान है। यह मानवतावादी धर्म है।

4. **स्वदेश**– स्वदेश प्रेम और स्वदेशाभिमान के बिना हम अपनी अस्मिता की रक्षा नहीं कर सकते हैं। राष्ट्रीयता का एक महत्वपूर्ण पहलू स्वशासन का सिद्धान्त माना जाता है। ब्रिटिश पार्लियामेण्ट ने एक कानून, (गवर्नमैंट आफ इन्डिया एक्ट,1858) पास करके भारत के शासन–तन्त्र को ईस्ट इन्डिया कम्पनी से लेकर सीधा अपने अधीन कर लिया था। 1 नवम्बर 1858 को तत्कालीन वायसराय और गवर्नर जनरल लार्ड केनिंग ने दरबार में महारानी का एक घोषणा पत्र पढ कर सुनाया जिसमें कहा गया था–''हमारी प्रबल इच्छा है कि अब हम भारत में शान्तिपूर्ण उद्योगों को प्रोत्साहन दें, जनोपयोगी और उन्नति के कार्यों को आगे बढ़ायें और अपनी प्रजा के हित की दृष्टि से कार्य करें। उनकी समृद्धि ही हमारी शक्ति होगी, उनकी सन्तुष्टि ही हमारी सुरक्षा होगी और उनकी कृतज्ञता ही हमारा पुरस्कार होगा।'' महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में कहा कि विदेशियों का राज्य चाहे वह माता–पिता के समान न्याय और दया से युक्त क्यों न हो, कभी हितकारी नहीं हो सकता है। सन 1874 में लिखे गये ग्रन्थ आर्याभिविनय में महर्षि दयानन्द ने अपनी भावनायें इस प्रकार प्रकट कीं थीं–''अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न हों।''

5. **स्वसंस्कृति**–संस्कृति शब्द का बहुत व्यापक अर्थ है। संस्कृति मानव के सम्पूर्ण व्यवहार की परिचायक होती है। इसमें हमारी जीवन–चर्या और विचार पद्धति में कला, साहित्य, भाषा, धर्म, मनोरंजन और विश्वास आदि प्रतिबिम्बित होते हैं। स्वामी जी प्राचीन आदर्शों के उपासक थे परन्तु वे अंधविश्वासों, रुढ़ियों और पाखण्डों को भारतीय संस्कृति का अंग नही मानते थे। भारतीय संस्कृति के पुरातन मानदण्डों– वर्णव्यवस्था (गुण कर्म स्वभावानुसार), अध्यात्मवाद (एकेश्वरवाद) आश्रम व्यवस्था मोक्ष, अहिंसा, अपरग्रिह, यज्ञ, त्याग और योग में उनकी बड़ी आस्था थी।

गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली–

स्वामी दयानन्द ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए शिक्षा को अनिवार्य करने की बात कही है। वे राष्ट्र के लिए गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को सर्वोत्तम मानते थे। हमारे ऋषियों और शिक्षाविदों ने शिक्षा कैसी होनी चाहिए इस पर बहुत चिन्तन–मनन किया और गुरुकुल प्रणाली की शिक्षा पद्धति का विकास हुआ परन्तु कालान्तर में इसमें महाभारत काल के बाद से ही अत्यन्त गिरावट आने लगी। महर्षि दयानन्द सरस्वती के समय तक काफी गिरावट हो चुकी थी। महर्षि ने समस्त तथ्यों का अवलोकन करने के बाद प्राचीन भारत के आचार्य–कुलों, आरण्यक–आश्रमों और विद्यापीठों को दृष्टिगत करते हुए शिक्षा के सम्बन्ध में कतिपय सिद्धान्त प्रतिपादित किए थे। उनका विचार था कि बालकों और बालिकाओं को शिक्षा के लिए पाठशालाओं (आचार्यकुलों और गुरुकुलों) में भेजना माता–पिता के लिए अनिवार्य होना चाहिए। लड़कों और लड़कियों की पाठशालाएं पृथक् व एक दूसरे से दूर होनी चाहिए। महर्षि दयानन्द सहशिक्षा के विरोधी थे। उनके विचार से कन्याओं की शिक्षण सस्थाओं में सब शिक्षक, कर्मचारी व सेवक स्त्रियां होनी चाहिए और पुरुषों की शिक्षण संस्थाओं में सब पुरुष होने चाहिए। गुरुकुल प्रवेश के बाद शिक्षा

समाप्ति तक विद्यार्थी का परिवार से कोई सम्बन्ध न रहे। गुरुकुल नगरों से दूर हों। विद्यार्थी ब्रह्मचारी यम नियमों का पालन करने वाले और इन्द्रिय–संयमी रहें। आचार्य विद्यार्थियों से पुत्रवत् व्यवहार करें। आर्ष पाठ–विधि से अध्ययन के बाद चरक, सुश्रुत, आदि ऋषि–मुनि प्रणीत ग्रन्थ वैद्यक शास्त्र, चिकित्सा आदि चार वर्ष के भीतर पढ़ावें। आचार्य के रूप में अध्यापक धार्मिक, विद्वान् और सदाचारी हों और समावर्त्तन संस्कार के समय विद्यार्थी के गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार वर्ण का निर्धारण किया जाए।

महर्षि दयानन्द के द्वारा प्रतिपादित शिक्षा पद्धति और पठन–पाठन विधि को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज द्वारा जो विभिन्न शिक्षण संस्थाएं स्थापित की गयीं थीं, प्रारम्भ में इन्हें पाठशाला नाम दिया गया था, जिनके लिए बाद में **'गुरुकुल'** नाम का प्रयोग किया था। वर्तमान समय में सम्पूर्ण भारत में दो सौ से अधिक गुरुकुल स्थापित हैं जिनमें महर्षि के शिक्षण विषयक मन्तव्यों को क्रियान्वित करने का प्रयास किया जा रहा है और आंशिक रूप से यह प्रयास सफल भी रहा है।

किसी मनुष्य जाति व धर्म के मानने वाले लोगों की अपनी परम्परायें व रीति–रिवाज भी होते हैं जो कि उनकी संस्कृति का अंग कहलाते हैं। भारतीय धर्म व संस्कृति की बात करें तो यहां भी अनेकानेक परम्परायें व रीति–रिवाज प्रचलित हैं जिनके संशोधन व सुधार सहित अनावश्यक का त्याग तथा भूली हुई आवश्यक परम्पराओं का पुनः प्रचलन स्वामी दयानन्द जी व आर्यसमाज ने किया है। स्वामी दयानन्द ने समस्त वैदिक परम्पराओं को पंच महायज्ञों व 16 वैदिक संस्कारों में ढालने सहित भारत में मनाये जाने वाले मुख्य पर्वों होली, दीपावली, शिवरात्रि आदि को वैदिक विधि से मनाये जाने का शुभारम्भ किया। आर्यसमाज अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि का पक्षधर है और सभी मनुष्यों को वेदादि ग्रन्थों सहित सभी प्रकार के ज्ञान की पुस्तकों को नियमित रूप से पढ़ने व पढ़ाने को जीवन का अनिवार्य अंग मानता है। वैदिक संस्कृति में अच्छी परम्पराओं का प्रचलन व अनावश्यक एवं बुरी प्रथाओं के नियंत्रण का आर्यसमाज समर्थक है। इस क्षेत्र में आर्यसमाज ने बहुमूल्य योगदान दिया है। आर्यसमाज की प्रत्येक मान्यता व सिद्धान्त सत्य मान्यताओं व तर्कों पर आधारित हैं, जिनसे समाज लाभान्वित होता है। आर्यसमाज भारत तक ही सीमित न होकर एक विश्वव्यापी संगठन है।

मनुष्य का व्यवहार, व्यक्तिगत व सामाजिक नियम तथा विधि–विधान कैसें हों, इसके लिए आर्यसमाज वैदिक परम्पराओं व मनुस्मृति के अविवादित सभी बुद्धिसंगत व देश समाजोपयोगी नियमों को स्वीकार करता है। स्वामी दयानन्द ने ऐसे अधिकांश नियमों का सत्यार्थप्रकाश सहित अपने ग्रन्थों में उल्लेख भी किया है। महर्षि दयानन्द द्वारा आर्यसमाज के नियम, मान्यताओं और परम्पराओं को सत्य व असत्य की कसौटी पर कस कर निर्धारित किये गये हैं। आर्यसमाज ही देश की पहली ऐसी संस्था है जिसने अंग्रेजों के दमनकारी शासन में स्वदेश भक्ति को उदबुद्ध किया जिसके परिणामस्वरूप देश सन् 1947 में स्वतन्त्रता हुआ। भारतीय कांग्रेस के आजादी के इतिहास में यह लिखा गया है कि स्वतंत्रता के आन्दोलन में संघर्ष करने वाले अस्सी प्रतिशत से अधिक व्यक्ति आर्यसमाज के सदस्य थे या आर्यसमाज के विचारों से प्रभावित होकर अपने जीवन की आहुति देने के लिए स्वातंत्र्य संग्राम में कूद पड़े थे। आर्यसमाज ने विभिन्न स्थानों पर विद्यालय, गुरुकुल, चिकित्सालय, गोशालाएं, विधवा आश्रम और सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र आदि स्थापित कर समाज में शिक्षा का प्रचार–प्रसार करने के साथ ही उनके आर्थिक स्तर में भी सुधार के अनेक प्रयत्न किए हैं और अभी यह प्रयास जारी हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज की भारतीय संस्कृति और अस्मिता के संरक्षण में अपूर्व भूमिका रही है।

'क्या संसार महर्षि दयानन्द की मानव कल्याण की यथार्थ भावनाओं को समझ सका'

–मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द (1825–1883) ने देश व समाज सहित विश्व की सर्वांगीण उन्नति का धार्मिक व सामाजिक कार्य किया है। क्या हमारे देश और संसार के लोग उनके कार्यों को यथार्थ रूप में जानते व समझते हैं? क्या उनके कार्यों से मनुष्यों को होने वाले लाभों की वास्तविक स्थिति का ज्ञान विश्व व देश के लोगों को है? जब इन व ऐसे अन्य कुछ प्रश्नों पर विचार करते हैं तो यह स्पष्ट होता है कि हमारे देश व संसार के लोग महर्षि दयानन्द, उनकी वैदिक विचारधारा और सिद्धान्तों के महत्व के प्रति अनभिज्ञ व उदासीन है। यदि वह जानते होते तो उससे लाभ उठा कर अपना कल्याण कर सकते थे। न जानने के कारण वह वैदिक विचारधारा से होने वाले लाभों से वंचित हैं और नानाविध हानियां उठा रहे हैं। **अतः यह विचार करना समीचीन है कि मनुष्य महर्षि दयानन्द की वैदिक विचारधारा के सत्य व यथार्थ स्वरूप को क्यों नहीं जान पाये?** इस पर विचार करने पर हमें इसका उत्तर यही मिलता है कि महर्षि दयानन्द के पूर्व व बाद में प्रचलित मत–मतान्तरों के आचार्यों व तथाकथित धर्मगुरुओं ने स्वार्थ, हठ, दुराग्रह व अज्ञानतावश उनका विरोध किया और उनके बारे में मिथ्या प्रचार करके अपने–अपने अनुयायियों को उनके व उनकी विचारधारा को जानने व समझने का अवसर व स्वतन्त्रता प्रदान नहीं की। आज भी संसार के अधिकांश लोग मत–मतान्तरों के सत्यासत्य मिश्रित विचारों व मान्यताओं से बन्धे व उसमें फंसे हुए हैं। सत्य से अनभिज्ञ वा अज्ञानी होने पर भी उनमें ज्ञानी होने का मिथ्या अहंकार है। रूढ़िवादिता के संस्कार भी इसमें मुख्य कारण हैं। इन मतों व इनके अनुयायियों में सत्य–ज्ञान व विवेक का अभाव है जिस कारण वह भ्रमित व अज्ञान की स्थिति में होने के कारण यदि आर्यसमाज के वैदिक विचारों व सिद्धान्तों का नाम सुनते भी हैं तो उसे संसार के मत–मतान्तरों व अपने मत–सम्प्रदाय का विरोधी मानकर उससे दूरी बनाकर रखते हैं।

महर्षि दयानन्द का मिशन क्या था? इस विषय पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि वह संसार के धार्मिक, सामाजिक व देशोन्नति संबंधी असत्य विचारधारा, मान्यताओं व सिद्धान्तों को पूर्णतः दूर कर सत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों को प्रतिष्ठित करना चाहते थे। इसी उद्देश्य से उन्होंने अपने पिता का घर छोड़ा था और सत्य की प्राप्ति के लिए ही वह एक स्थान से दूसरे स्थान तथा एक विद्वान के बाद दूसरे विद्वान की शरण में सत्य–ज्ञान की प्राप्ति हेतु जाते रहे और उनसे ज्ञान प्राप्त कर सभी अर्वाचीन व प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन भी करते रहे। अपनी इसी धुन व उद्देश्य के कारण वह अपने समय के देश के सभी बड़े विद्वानों के सम्पर्क में आये, उनकी संगति की और उनसे जो विद्या व ज्ञान प्राप्त कर सकते थे, उसे प्राप्त किया और इसके साथ ही योगी गुरुओं से योग सीख कर सफल योगी बने। उनकी विद्या की पिपासा मथुरा में स्वामी विरजानन्द सरस्वती की पाठशाला में सन् 1860

से सन् 1863 तक के लगभग 3 वर्षों तक अष्टाध्यायी, महाभाष्य तथा निरुक्त पद्धति से संस्कृत व्याकरण का अध्ययन करने के साथ गुरु जी से शास्त्र चर्चा कर अपनी सभी भ्रान्तियों को दूर करने पर समाप्त हुई। वेद व वैदिक साहित्य का ज्ञान और योगविद्या सीखकर वह अपने सामाजिक दायित्व की भावना व गुरु की प्रेरणा से कार्य क्षेत्र में उतरे और सभी मतों के सत्यासत्य को जानकर उन्होंने विश्व में धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र में असत्य व मिथ्या मान्यताओं तथा भ्रान्तियों को दूर करने के लिए उसका खण्डन किया। प्रचलित धर्म–मत–मतान्तरों मे जो सत्य था उसका उन्होंने अपनी पूरी शक्ति से मण्डन वा समर्थन किया। **आज यदि हम स्वामी दयानन्द व आर्यसमाज के किसी विरोधी से पूछें कि महर्षि दयानन्द ने तुम्हारे मत की किस सत्य मान्यता वा सिद्धान्त का खण्डन किया तो इसका उत्तर किसी मत–मतान्तर वा उसके अनुयायी के पास नहीं है। इसका कारण यह है कि उन्होंने सत्य का कभी खण्डन नहीं किया। उन्होंने तो केवल असत्य व मिथ्या ज्ञान का ही खण्डन किया है जो कि प्रत्येक मनुष्य का मुख्य कर्तव्य या धर्म है।** दूसरा प्रश्न अन्य मत वालों से यदि यह करें कि क्या स्वामी दयानन्द जी ने वेद संबंधी अथवा अपने किसी असत्य व मिथ्या विचार व मान्यता का प्रचार किया हो तो बतायें? इसका उत्तर भी किसी मत के विद्वान, आचार्य व अनुयायी से प्राप्त नहीं होगा। **अतः यह सिद्ध तथ्य है कि महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में कभी किसी मत के सत्य सिद्धान्त का खण्डन नहीं किया और न ही असत्य व मिथ्या मान्यताओं का प्रचार किया।** उन्होंने केवल असत्य का ही खण्डन और सत्य का मण्डन किया जो कि मनुष्य जाति की उन्नति के लिए सभी मनुष्यों व मत–मतान्तरों के आचार्यों को करना अभीष्ट है। **इसका मुख्य कारण यह है कि सत्य वेद धर्म का पालन करने से मनुष्य का जीवन अभ्युदय को प्राप्त होता है और इसके साथ वृद्धावस्था में मृत्यु होने पर जन्म–मरण के बन्धन से छूट कर मोक्ष प्राप्त होता है।**

यह भी विचार करना आवश्यक है कि सत्य से लाभ होता है या हानि और असत्य से भी क्या किसी को लाभ हो सकता है अथवा सदैव हानि ही होती है? वेदों के ज्ञान के आधार पर सत्य के सन्दर्भ में महर्षि दयानन्द ने एक नियम बनाया है कि **सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।** यह नियम संसार में सर्वमान्य नियम है। **अतः सत्य से लाभ ही लाभ होता है, हानि किसी की नहीं होती।** हानि तभी होगी यदि हमने कुछ गलत किया हो। अतः मिथ्याचारी व्यक्ति व मत–सम्प्रदाय के लोग ही असत्य का सहारा लेते हैं और सत्य से डरते हैं। ऐसे मिथ्या मतों, उनके अनुयायी व प्रचारकों की मान्यताओं के खण्डन के लिए महर्षि दयानन्द को दोषी नहीं कहा जा सकता। इस बात को कोई स्वीकार नहीं करता कि मनुष्य को जहां आवश्यकता हो, वहां वह असत्य का सहारा ले सकता है और जहां सत्य से लाभ हो वहीं सत्य का आचरण करे। **किसी भी परिस्थिति में असत्य का आचरण अनुचित, अधर्म वा पाप ही कहा जाता है। अतः सत्याचरण करना ही धर्म सिद्ध होता है और असत्याचरण अधर्म।** महर्षि दयानन्द ने वेदों के आधार पर सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि अनेक ग्रन्थों की रचना की है। इन ग्रन्थों में उन्होंने मनुष्य के धार्मिक व सामाजिक कर्तव्यों व अकर्तव्यों का वैदिक प्रमाणों, युक्ति व तर्क के आधार पर प्रकाश किया है। **सत्यार्थप्रकाश साधारण मनुष्यों की बोलचाल की भाषा हिन्दी में लिखा गया वैदिक धर्म का सर्वांगीण, सर्वाधिक महत्वपूर्ण व प्रभावशाली धर्मग्रन्थ है।** धर्म व इसकी मान्यताओं का संक्षिप्त रूप महर्षि दयानन्द ने पुस्तक के अन्त में

'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' लिखकर प्रकाशित किया है। यह स्वमन्तव्यामन्तव्य ही मनुष्यों के यथार्थ धर्म के सिद्धान्त व कर्तव्य हैं जिनका विस्तृत व्याख्यान सत्यार्थप्रकाश व उनके अन्य ग्रन्थों में उपलब्ध है। स्वमन्तव्यामन्तव्य की यह सभी मान्यतायें संसार के सभी मनुष्यों के लिए धर्मपालनार्थ माननीय व आचरणीय है परन्तु अज्ञान व अन्धविश्वासों के कारण लोग इन सत्य मान्यताओं से अपरिचित होने के कारण इनका आचरण नहीं करते और न उनमें सत्य मन्तव्यों को जानने की सच्ची जिज्ञासा ही है। इसी कारण संसार में मत–मतान्तरों का अस्तित्व बना हुआ है। इसका एक कारण यह भी है कि देश व संसार में धर्म सम्बन्धी सत्य व यथार्थ ज्ञान के प्रचारकों की कमी है। यदि यह पर्याप्त संख्या में होते तो देश और विश्व का चित्र वर्तमान से कहीं अधिक उन्नत व सन्तोषप्रद होता।

महर्षि दयानन्द ने सन् 1863 से वेद वा वैदिक मान्यताओं का प्रचार आरम्भ किया था जिसने 10 अप्रैल, 1875 को मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना के बाद तेज गति पकड़ी थी। वेद प्रचार के कार्य में वैदिक मत के विरोधियों व विधर्मियों से शास्त्र चर्चा, विचार विनिमय, वार्तालाप और शास्त्रार्थ सम्मिलित थे। अनेक मौलिक ग्रन्थों की रचना सहित ऋग्वेद का आंशिक और पूरे यजुर्वेद का उन्होंने भाष्य किया। उनके बाद उनके अनेक शिष्यों ने चारों वेदों का भाष्य पूर्ण किया। न केवल वेदों पर अपितु दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति, वाल्मीकि रामायण व महाभारत आदि पर भी भाष्य, अनुवाद, ग्रन्थ व टीकायें लिखी गईं। संस्कृत व्याकरण विषयक भी अनेक नये ग्रन्थों की रचना के साथ प्रायः सत्यार्थप्रकाश सहित सभी आवश्यक ग्रन्थों को अनेक भाषाओं में अनुवाद व सुसम्पादित कर प्रकाशित किया गया जिससे संस्कृत अध्ययन सहित आध्यात्मिक विषयों का ज्ञान प्राप्त करना अनेक भाषा–भाषी लोगों के लिए सरल हो गया। एक साधारण हिन्दी पढ़ा हुआ व्यक्ति भी समस्त वैदिक साहित्य का अध्ययन कर सकता है। **यह सफलता महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज व इसके विद्वानों की देश व विश्व को बहुमूल्य देन है।** यह सब कुछ होने पर भी आर्यसमाज की वैदिक विचारधारा का जो प्रभाव होना चाहिये था वह नहीं हो सका। इसके प्रमुख कारणों को हमने लेख के आरम्भ में प्रस्तुत किया है। वह यही है कि **देश व संसार के लोग महर्षि दयानन्द की मानवमात्र की कल्याणकारी विचारधारा व उनके यथार्थ भावों को अपने–अपने अज्ञान, स्वार्थ, हठ और पूर्वाग्रहों वा दुराग्रहों के कारण जान नही सके।** कुछ अन्य और कारण भी हो सकते हैं। इसके लिए आर्यसमाज को अपने संगठन व प्रचार आदि की न्यूनताओं पर भी ध्यान देना होगा और उन्हें दूर करना होगा। वेद वा धर्म प्रचार को बढ़ाना होगा और वैदिक मान्यताओं को सारगर्भित व संक्षेप में लघु पुस्तकों के माध्यम से प्रस्तुत कर उसे घर–घर पहुंचाना होगा। यदि प्रचारकों की संख्या अधिक होगी और संगठित रूप से प्रचार किया जायेगा तो सफलता अवश्य मिलेगी और मानवता का कल्याण होगा।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून में पधारने वाले सभी अतिथियों एवं साधकों से विनम्र निवेदन है कि वह अपने साथ अपना आई.डी. प्रूफ साथ लेकर आयें ताकि आश्रम में निवास करने में उन्हें किसी प्रकार की कठिनाई न हो। तपोवन आश्रम का मेन गेट रात्रि 9 बजे बंद कर दिया जाता है यदि आप रात्रि 9 बजे के बाद आश्रम में निवास हेतु आ रहे हैं तो कृपया आश्रम के कर्मचारी श्री प्रकाश–8954361107 अथवा श्री जगमोहन–7830798919 पर पूर्व में ही सूचित कर दें ताकि आपके आवास एवं भोजन की उचित व्यवस्था की जा सके।

अधिक जानकारी के लिए आश्रम के सचिव से दूरभाष नं० 9412051586 पर वार्ता कर सकते हैं।

आर्यसमाज का उद्देश्य

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

उन्नीसवीं शताब्दी भारत के लिए भयंकर संकट का समय था। भारत की संस्कृति, सभ्यता और साहित्य मरणासन्न थे। उसकी कला और विज्ञान पर वज्रपात होने को था। उसके स्वाभिमान एवं स्वेदशाभिमान की भावना को जाग्रत् करने वाली दैवी सम्पदा की होली हो रही थी। उसकी आध्यात्मिकता की चिता चुनी जा रही थी। धर्म की नौका मझधार में जा चुकी थी। एक ओर ईसाई हिन्दुओं को ईसा की भेड़ों में मिलाने के प्रयत्न में संलग्न थे, दूसरी ओर मुसलमानों की बन आई थी। सामाजिक कुरीतियों ने जातीय गौरव को पतित कर डाला था। भिन्न–भिन्न सम्प्रदायों की तूती बोलती थी। महन्तों तथा मठाधीशों के व्यभिचार की सीमा नहीं थी। हिन्दू अनाथ बालक–बालिकाएँ यवनों व ईसाइयों का आश्रय ताकती थीं। वेदों का पठन–पाठन स्मरणमात्र को अवशिष्ट था। सामाजिक कुरीतियों, छूआ–छूत, बाह्याडम्बर, अन्धविश्वास, रूढ़ियों, अशिक्षा, दासता आदि के कारण परिस्थिति और भी भयंकर हो गई थी। देश में अन्धकार के बादल छाये हुए थे। वैदिक सूर्य अस्त होना चाहता था। सब ओर निराशा–ही–निराशा का साम्राज्य था, ऐसे भीषण समय में क्रान्ति के अग्रदूत, समाज–सुधारक, देशोद्धारक, आदित्य ब्रह्मचारी, योगिराज महर्षि दयानन्द ने भारत के रंगमंच पर पदार्पण किया।

उस महान् कर्मयोगी संन्यासी ने भारत में वैदिक ज्योति जगाई। निराशा के मेघ–मण्डल को छिन्न–भिन्न कर डाला। महर्षि दयानन्द एक अनुपम नेता थे। उन्होंने धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, बौद्धिक, चारित्रिक तथा शैक्षणिक सभी क्षेत्रों में भारी उथल–पुथल मचा दी। उन्होंने अंगुली उठा–उठाकर बताया, इधर सुधार करो, उधर सुधार करो। वैदिक सूर्य जो टिमटिमा रहा था फिर जगमागाने लगा। मृत्यु को जीतने के लिए घर से निकलने वाला यदि न केवल स्वयं ही मृत्युञ्जय बना, वरन् जिस देश व जाति में वह जन्मा उसको भी पराधीनता के पाश से छुड़ा दिया। उस महान् योगी के प्रसारित आशीर्वाद से उत्साहित होकर भारत के शुभ–चिन्तकों ने 'आर्यसमाज' के रूप में शक्ति–संचय और कार्यसिद्धि का उद्योग आरम्भ कर दिया।

महर्षि दयानन्द ही आधुनिक भारत के निर्माता थे। भारत के स्वराज्य–भवन की नींव मे उन्होंने ही सबसे पूर्व अपनी आहुति दी थी। सर्वप्रथम स्वराज्य शब्द का प्रयोग भी महर्षि दयानन्द ने ही अपने अमरग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में किया था। भारतीय समाज–सुधार आन्दोलन का प्रचार और संचालन भी उन्होंने ही किया था। वे एक महान् परोपकारी, अखण्ड ब्रह्मचारी, अद्भुत तार्किक, वेदों के उद्भट विद्वान्, सच्चे योगी और ईश्वर के भक्त थे।

महर्षि दयानन्द विशालकाय, हृष्ट–पुष्ट, वज्र के समान दृढ़ शरीर तथा गौर वर्ण के थे। चेहरे से ओज और तेज टपकता था। उनकी भुजाएँ घुटनों तक लम्बायमान थीं। आप महान् व्याख्याता, अद्वितीय शास्त्रार्थ महारथी, उच्च कोटि के लेखक, महान् दार्शनिक तथा आदर्श संन्यासी थे। महर्षि दयानन्द एक धर्ममेघ थे, जिन्होंने अविद्या–अन्धकार, राग–द्वेष की उठती हुई ज्वालाओं को वैदिक पीयूष से शान्त कर दिया। समस्त देश में भ्रमण करते हुए वे गर्ज–गर्ज कर बरसे। उन्होंने दुखियों को आश्वासन प्रदान दिया, अनाथों के लिए अनाथालय खोले, विधवाओं के लिए वैदिक पाठशालाएँ स्थापित कीं, भूले–भटकों को

सन्मार्ग दिखाया। पाखण्डियों तथा पाखण्डवादों का डटकर सामना किया तथा सत्य को वास्तविक रूप में प्रकट कर मनुष्यमात्र का महान् उपकार किया।

महर्षि का जन्म फाल्गुन संवत् १८८१ विक्रमी में काठियावाड़ प्रान्त के मौरवी राज्य के टंकारा नामक एक छोटे– से ग्राम में हुआ था। उनके बाल्यकाल का नाम मूलशंकर तथा पिताजी का नाम श्रीकर्षनजी तिवाड़ी था। श्रीकर्षणजी औदीच्य ब्राह्माण तथा बड़े भूमिहार थे। लेन–देन का कार्य भी किया करते थे।

जिस समय आपकी अवस्था चौदह वर्ष की थी आपने अपने पिताजी की आज्ञानुसार शिवरात्रि का व्रत रखा। सब सो गये, परन्तु मूलशंकर जागते रहे। आधी रात बीतने पर उन्होंने देखा कि एक चूहा शिवलिंग पर चढ़े मिष्ठान आदि भक्ष्य पदार्थों का बड़े आनन्द से भोग कर रहा है। उसी समय से मूर्ति पूजा से उनकी आस्था उठ गई और उन्होंने दृढ़–प्रतिज्ञा की कि मैं सच्चे शिव के दर्शन करूँगा।

जिस समय आप की अवस्था ११ वर्ष की थी आपकी छोटी भगिनी का स्वर्गवास हो गया। घर के लोग सिसक–सिसककर रो रहे थे तथा शोकातुर हो रहे थे, परन्तु मूलशंकर सर्वथा स्तब्ध और चिन्ता–सागर में डुबकियाँ लगा रहे थे। वे सोच रहे थे–मृत्यु क्या हैं? क्या मुझे भी एक दिन मरना पड़ेगा? मुक्ति के साधन क्या है? मोक्षपद किस प्रकार प्राप्त हो सकता है और उसी समय उन्होंने प्रतिज्ञा की चाहे कुछ भी हो मैं अवश्य ही मृत्युञ्जय बनूँगा।

इक्कीस वर्ष की अवस्था में मृत्युञ्जय पद प्राप्त करने के लिए तथा सच्चे शिव को पाने के लिए सब इष्ट–मित्र, बन्धु–बान्धव, कुटुम्ब–परिवार तथा नाते–रिश्तेदारों को छोड़ वे घर से निकल पड़े। छत्तीस वर्ष की अवस्था में विद्या–प्राप्ति की अभिलाषा से महर्षि ने गुरुवर विरजानन्दजी की कुटिया के द्वार खटखटाये। साढ़े अड़तीस वर्ष की अवस्था में श्री विरजानन्दजी महाराज से आशीर्वाद, विद्या तथा बल प्राप्त कर कार्यक्षेत्र में कूद पड़े। ५१ वर्ष की अवस्था में संवत् १९४० विक्रमी में एक पापी के विष–प्रयोग से अपने पंचभौतिक शरीर को छोड़कर आपने मोक्ष प्राप्त किया।

इस थोड़े–से तथा अत्यन्त व्यस्त और संघर्षमय जीवन में ऋषि दयानन्द ने सैकड़ों शास्त्रार्थ किये, जिनमें विपक्षियों को हर बार मुँह की खानी पड़ी। हजारों ओजस्वी व्याख्यान दिये। वेदों का भाष्य किया तथा हजारों पृष्ठ के क्रान्तिकारी साहित्य का निर्माण किया। सारे भारत का भ्रमण किया। इतना ही नहीं, अपने प्रतिनिधि और उत्तराधिकारी के रूप में 'आर्यसमाज' की स्थापना की।

जब गुरुवर विरजानन्दजी से विद्या प्राप्त कर महर्षि दयानन्द कार्यक्षेत्र में अवतरित हुए तब उन्होंने जो दृश्य देखे वे बड़े भयानक थे। ईसाई और मुसलमान आर्य जाति को निगल जाना चाहते थे। मानवता का गला घोंटा जा रहा था। दानवता का ताण्डव नृत्य हो रहा था। विधवाओं, अनाथों और गरीबों का करुण–क्रन्दन देशभर में व्याप्त हो रहा था। देवी के नाम पर पशु–पक्षियों की हत्या हो रही थी। ब्राह्मणादि मांस–भक्षण और मद्यपान करने लगे थे। दीपावली के पवित्र अवसर पर धर्म के नाम पर जुआ खेला जाता था। मन्दिरों में व्यभिचार बढ़ रहा था। वेद–शास्त्रों का स्थान पुराणों ने ले लिया था। भारत इतना गिर गया था कि जिन विदेशियों ने हमारे धर्म तथा सभ्यता का नाश किया, भारत उन्हीं की कब्रों की पूजा करने लग गया था। सारी परिस्थिति बहुत ही दयनीय तथा निराशाजनक थी।

महर्षि दयानन्द ने परिस्थिति का गम्भीर अध्ययन किया। अपने व्यक्तित्व, वाड्.माधुर्य और अद्भुत संगठन–शक्ति द्वारा देश और जाति के

वैभव और ऐश्वर्य को पुनः लौटाने के लिए वे कार्यक्षेत्र में कूद पड़े। अपने पीछे अपने कार्यों की गति को अव्याहत बनाये रखने के लिए उन्होंने 'आर्यसमाज' की स्थापना की।

महर्षिजी ने अपने कार्य तथा प्रचार को स्थायी तथा निश्चित रूप देने के लिए मुम्बई निवासी राय बहादुर दादुबा पाण्डुरंगजी तथा समस्त देशवासी बहुत–से श्रद्धालु धार्मिक पुरुषों की सहायता तथा राज्यमान्य राजा श्री पानाचन्द्र आनन्दजी की योजनानुसार भारत के प्रसिद्ध समृद्धिशाली मुम्बई नगर के गिरी गाँव मुहल्ले मे डॉक्टर माणिकचन्द्र की वाटिका में चैत्र शुदि ५ संवत् १९३२ विक्रमी को आर्यसमाज की स्थापना की। उस समय सर्वसम्मति से २८ नियम निर्धारित किये गये। इन्हीं नियमों में महर्षि की आत्मा का प्रतिबिम्ब और आर्यसमाज का उद्देश्य वर्त्तमान था। आगे चलकर लाहौर आर्यसमाज की स्थापना के समय इन्हीं २८ नियमों को संक्षिप्त करके दस नियमों का रूप दिया गया तथा उपनियम अलग कर दिये गये।

आर्यसमाज की स्थापना का उद्देश्य था आर्यजाति में नूतन जीवन और जागृति उत्पन्न करना, तभी तो महर्षि दयानन्द ने अन्य मत–मातन्तरों तथा ब्राह्मसमाज एवं प्रार्थनासमाज की समीक्षा करने के बाद आर्यसमाज के सम्बन्ध में यह लिखा था कि–

"आर्यसमाज के साथ मिलके उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा, क्योंकि हम को और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त्तदेश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता।" **(सत्यार्थप्रकाश, एकादशसमुल्लास)**

आर्यसमाज के धर्म–प्रचार से, सामाजिक कुरीतियों के खण्डन से, अछूतोद्धार से, विधवा–विवाह–प्रचार से, बाल तथा वृद्ध–विवाह निषेध से, स्त्री और शूद्रों को वेदाधिकार देने आदि कार्यों से भारत में तो आर्यसमाज की धूम मची ही, विदेशों में भी आर्यसमाज की लहर पहुँच गई। अमेरिका में स्थापित थियासोफिकल सोसायटी (ब्रह्मविद्या–प्रचारणी सभा) करनल अल्काट और मैडम ब्लेवैस्टकी के पत्र–व्यवहार के पश्चात् आर्यसमाज की शाखा घोषित कर दी गई। करनल अल्काट और मैडम ब्लेवैस्टकी स्वामीजी के दर्शन करने भारत भी पधारे थे, परन्तु यह सम्बन्ध अधिक न चल सका। मतभेद हो जाने के कारण आर्यसमाज और थियोसोफिकल सोसायटी का सम्बन्ध–विच्छेद कर दिया गया।

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के छठे नियम में संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य बताया है और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इसी नियम में साधन भी बता दिये हैं अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना है।

कुछ लोग कहते हैं–'शरीरं व्याधिमन्दिरम्' यह शरीर रोगों का घर है, परन्तु ऐसे लोग भूलते हैं। शरीर व्याधि–मन्दिर नहीं है, अपितु 'शरीरमात्ममन्दिरम्', यह शरीर आत्मा और परमात्मा के दर्शनों की पावन स्थली है। यह शरीर तो नारायण की नगरी है, देवपुरी है और वेद के शब्दों में अयोध्यापुरी है, सप्तर्षियों का आश्रम है।

हमारा शरीर प्रभु का चलता–फिरता मन्दिर है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष तथा प्रभु–प्राप्ति के लिए हमे अपने शरीर को बलशाली बनाना चाहिए। कैसा हो हमारा शरीर? वेद के शब्दों में–अश्वा भवतु नस्तनूः।

हमारे शरीर पत्थर के समान दृढ़ हों।

यदि हमारा शरीर स्वस्थ नहीं तो हम धर्म,

कर्म, भक्ति, पूजा – पाठ कुछ नही कर सकते। शारीरिक उन्नति के लिए चरित्र–निर्माण, ब्रह्मचर्य, नियमित व्यायाम तथा सात्त्विक भोजन की अत्यन्त आवश्यकता है। योगाभ्यास और प्राणायाम के द्वारा भी हम शरीर को दृढ़ एवं वीर्यवान् बना सकते हैं।

शरीर को बलवान् एवं शक्तिसम्पन्न बनाने के साथ–साथ आत्मिक उन्नति भी अत्यन्त आवश्यक है। आत्मिक उन्नति का अर्थ है आत्मा पर पड़े हुए मल, विक्षेप, आवरणरूपी पर्दों को हटाना। आत्मिक उन्नति के लिए आवश्यक है कि जो पतन के कारण इसे अपने पद से नीचे गिराते हैं, उन्हें दूर किया जाए। इसके मैल को जो इसपर चढ़ा हुआ है, धोकर शुद्ध कर दिया जाए। अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश को समाप्त किया जाए। जब आत्मा इस प्रकार निर्मल, शुद्ध एवं पवित्र हो जाता है, तब उसपर ईश्वरभक्ति का रङ्ग चढ़ता है। मुण्डक–उपनिषद् में कहा है–

अन्तः शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो, यं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः।।

वह परमेश्वर शरीर के भीतर प्रकाशमय और शुद्ध है, उस ईश्वर को निर्दोष यतिजन देखते हैं। आत्मिक शक्ति प्राप्त होने पर हम बलवान, अन्यायकारी व पापी मनुष्य के सामने भी नहीं झुकेंगे। निर्भय होकर वेदों का नाद बजाते हुए संसार को आर्य बनाएँगे और संसार का उपकार करेंगे।

शारीरिक और आत्मिक बल में बढ़े–चढ़े व्यक्तियों द्वारा बनाया हुआ समाज ही बलवान् होगा, क्योंकि समाज व्यक्तियों पर निर्भर होता है। शक्तिशाली समाज के सम्पर्क में आये हुए व्यक्ति भी उन्नति की ओर अग्रसर होंगे। यदि समाज निर्बल होगा तो समाज के सम्पर्क में आये हुए व्यक्ति भी निराश और हतोत्साहित होंगे। शक्तिशाली समाज राष्ट्र को उन्नत करेगा। राष्ट्रोन्नति से संसार का उपकार होगा।

संसार को आर्यसमाज से बड़ी–बड़ी आशाएँ हैं। आर्यसमाज से बहुत–सी आशाएँ रखते हुए अमेरिका के प्रसिद्ध दार्शनिक एण्ड्रयूजैक्सन डेविड ने एक बार लिखा था–

"मुझे एक आग दिखाई दे रही है, जो सर्वत्र व्यापक है और प्रत्येक वस्तु को जलाकर भस्म कर रही है। अमेरिका के विस्तीर्ण मैदानों में, अफ्रीका के बीहड़ जंगलों, एशिया के प्राचीन पर्वतों और यूरोप के महान् राज्यों पर मुझे उस आग की लपटें दिखाई दे रही हैं। इस अपरमित आग को देखकर, जो निस्सन्देह राज्यों, साम्राज्यों और समस्त संसार की नीति तथा प्रबन्ध के सब दोषों को पिघला डालेगी, मैं अत्यन्त आनन्दित होकर उत्साहमय जीवन बिता रहा हूँ। गगनचुम्बी पहाड़ों की चोटियाँ जल उठेंगी, घाटियों के सुन्दर और चमकीले नगर भुन जाएँगें, प्यारे घर और उनमें बेसुध होकर प्रेममय जीवन बितानेवाले हृदय मोम की तरह पिघल जाएँगे, जैसे सूर्य की सुनहरी किरणों के सामने ओस के बिन्दु अदृश्य हो जाते हैं।

"असीम उन्नति की आशा–विद्युत् से मनुष्य का हृदय चमक रहा है। उसकी केवल चिनगारियाँ आकाश की ओर उड़ती दीख पड़ती है। वक्ताओं, कवियों और ग्रन्थ– निर्माताओं की शिक्षाओं में कभी–कभी उसकी लपटों की चमक दृष्टिगोचर हो जाती है। आर्यसमाज की भट्टी में यह आग सनातन आर्यधर्म को स्वाभाविक रूप में लाने के लिए सुलगाई गई है। भारतवर्ष में एक परमयोगी ऋषि दयानन्द सरस्वती के हृदय में वह प्रकाशमान् हुई थी। हिन्दू और मुसलमान उस प्रचण्ड आग को बुझाने के लिए चारों ओर पूरे वेग से दौड़े, परन्तु

वह उत्तरोत्तर ऐसी तेजी के साथ बढ़ती और फैलाती गई कि उसके प्रकाशक दयानन्द को भी उसकी कल्पना न हुई होगी। ईसाइयों ने भी एशिया के इस प्रकाश को बुझाने में हिन्दू–मुसलमानों का साथ दिया, परन्तु वह ईश्वरीय आग और भी अधिक प्रज्वलित हो चारों ओर फैल गई। सम्पूर्ण दोषों की घटा इस आग के प्रकाश के सामने न टिक सकेगी। रोग के स्थान में आरोग्य, झूठे विश्वास, द्वेष के स्थान में सद्भाव, वैर के स्थान में ममता, नरक के स्थान में स्वर्ग, दुःख के स्थान में सुख, भूतों–प्रेतों के स्थान में परमेश्वर एवं प्रकृति का राज्य स्थापित हो जाएगा। मैं इस आग को मांगलिक समझता हूँ। जब यह आग सुन्दर पृथिवी को नवजीवन प्रदान करेगी, तब सर्वत्र सुख और सन्तोष छा जाएगा।"

यूरोप के तत्त्वदर्शी मैक्समूलर की भी ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के सम्बन्ध में ऐसी ही ऊँची, महान् और भव्य भावना थी।

आर्यसमाज के नेताओ ! कर्णधारो ! सदस्यो ! उपर्युक्त आशाओं का विचार करके अपने कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व का अनुभव करो। समस्त संसार में वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए समस्त संसार को आर्य बनाओ। हम सब मिलकर संसार का उपकार करते हुए अपने जीवनों की आहुति दे दें और प्रभु से यही प्रार्थना करें कि, "हे प्रभो ! हमारी हड्डियों में से वेद तथा वैदिक धर्म और आपकी भक्ति की सुन्दर सुगन्ध निकलती रहे।"

संसार के लोगो ! आओ ! संसार का उपकार करना जिस समाज का मुख्य उद्देश्य है, उसके सदस्य बनो।

यही पवित्र सन्देश है, जिससे यह समाज फूलता–फलता हुआ संसार में वैदिक धर्म का प्रचार कर सके।

वर की आवश्यकता

धीमान जाति की तलाकशुदा, निसंतान आयु 37 वर्ष, हाईट 5′–3″ सरकारी सेवारत शिक्षिका के लिए योग्य वर चाहिए। जाति बन्धन नहीं।

वधु की आवश्यकता

धीमान जाति के बैंक में उच्च पद पर कार्यरत सॉफ्टवेयर इंजीनियर आयु 34 वर्ष हाईट 5′–7″ आय 18 लाख प्रतिवर्ष हेतु सुयोग्य वधु की आवश्यकता है। जाति बन्धन नहीं।

सम्पर्क सूत्र : 9458902524

सौजन्य से–

KUKREJA INSTITUTE OF HOTEL MANAGEMENT

DEHRADUN

गोपालन से अद्‌भुत लाभ !

सुस्वास्थ एवं आर्थिक व सामाजिक समस्याओं का निदान के लिए गोपालन

योगाचार्य ओमप्रकाश मस्करा
अध्यक्ष, वेदप्रचार ट्रस्ट, कोलकाता

गीता में वैश्य का कर्त्तव्य गोपालन, कृषि एवं व्यापार करना दर्शाया गया है। वेदों में गोपालन से ऐश्वर्य प्राप्त होता है यह उल्लेख है। भारत में चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में प्रति व्यक्ति औसत २ गाय, अकबर के समय यह औसत १.५ डेढ़ हो गई। वर्तमान में १२५ करोड़ जनसंख्या के पीछे लगभग ७ करोड़ गायें बची है। गोपालन आज बोझ माना जाता है। इसके पीछे अंग्रेजों द्वारा भारत को गरीब बनाने और भारतीय संस्कृति को नष्ट करने की नीति थी।

- **रसोई–ईंधन व बिजली:** आज भारत सरकार को ५० हजार करोड़ रुपये रसोई गैस (LPG Gas) एवं यूरिया कृषि–खाद पर सब्सीडी के लिए प्रतिवर्ष अलग–अलग खर्च करना पड़ता है। गौबर–गैस प्लान्ट स्थापित कर इसमें गाय के गोबर व मूत्र का प्रयोग कर रसोई–ईंधन एवं बिजली प्राप्त कर सकते हैं। इसके गैस को बिजली में Convert कर पानी के मोटर–पम्प इत्यादि भी चलाये जाते हैं। रसोई–ईंधन में लकड़ी का प्रयोग न होने से पेड़–पौधे की सुरक्षा से पर्यावरण प्रदूषित होने से बचेगा और Global Warming से भी हम बचेंगे। साथ ही बिजली का खर्चा बचेगा। खड़गपुर में स्थापित नवनिर्मित गोशाला एवं गुरुकुल में विगत् २ वर्षों से गोबर–गैस प्लान्ट का उपयोग ईंधन व बिजली के रूप में हो रहा है। इस गोबर–गैस प्लान्ट से बची हुई Slurry को खेतों में प्रयोग कर आर्गेनिक पद्धति द्वारा उत्पादित खाद्य–पदाथों, शाक–सब्जियों से लगभग १५० व्यक्तियों का जीवनयापन हो रहा है और प्रतिमाह रसोई ईंधन एवं बिजली को खर्च में बचत हो रही है।
- **कृषि–खाद:** देशी गाय के १५ किलो गोबर, १५ लीटर गौमूत्र तथा २५० ग्राम पुराना गुड़ एक हांडी में १५ दिनों के लिए रखने से खाद तैयार होती है। एक किलो इस खाद को १० लीटर जल के साथ मिश्रित कर खेत में डाले या सूखाकर रखें और खेतों में व्यवहार कर आर्गेनिक फसल प्राप्त कर सकते हैं। हमारे किसान जो रासायनिक उर्बरकों व कीट–नाशकों का प्रयोग कर अधिकाधिक कर्ज के दल–दल में फंसकर आत्महत्या कर रहे हैं वे बचेंगे। आर्गेनिक खाद्य–फसलों, फलों, शाक–सब्जियों के उपयोग से कैंसर, शुगर, किडनी इत्यादि अनेकों शारीरिक रोगों से मुक्त होकर हम स्वस्थ रहेंगे।
- **कीट–खाद:** १५ लीटर देशी गाय का मूत्र, ३ किलो नीम की पत्ती, १ किलो लहसुन और १ किलो तम्बाकू (जड़ सहित) को एक हांडी में ढ़ककर जमीन में १५ दिनों के लिए गाड दे। इसके बाद ताम्बें के बर्त्तन में २५० ग्राम हरी मिर्च डालकर उबालने के बाद जब आधा हो जाये तो छान लेवें। इस ५x कीट–नाशक का १५x जल के साथ मिलाकर इसका छिड़काव करने से फसलों की रक्षा होगी। इससे जहरीली कीटनाशकों से होने वाले विभिन्न प्रकार के रोगों से मुक्ति मिलेगी और हम स्वस्थ रहेंगे।
- गौमूत्र के सेवन से सैकड़ों बिमारियों का इलाज होता है। गौ विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, नागपुर को USA का पेटेन्ट प्राप्त है। अमेरिका के Agricultural Deptt. ने गाय को चलता–फिरता Laboratory माना है।
- दिल्ली के I.I.T के प्रोफेसर डॉ0 विजय बिरेन्द्र ने गौमूत्र, गोबर और शहरी Biowaste से मोटरगाड़ी का ईंधन तैयार किया जिससे वे अपनी गाड़ी को हजारों कि.मी. चलाकर कर मिसाल कायम किया है।
- **विविध आर्थिक उत्पाद:** देशी गाय के गोबर, गो–मूत्र, अर्क आयुर्वेदिक दवाईयाँ, प्राकृतिक सिन्ट्रोनिला तेल के मिश्रण से सुगंधित फ्लोरवाश, फिनाईल, उपला/कांडा, मच्छर, कीड़े–मकोड़े भगाने का स्प्रे, साबुन, शैम्पू, मालिस तेल, मंजन, हवन सामग्री, मच्छर क्वाईल, नवग्रह धूप के उपयोग से गोपालन बढ़ेगा।
- एक गाय दस बार बछड़ा–बछड़ी पैदा करती है। अमूल डेयरी, मदर डेयरी व अन्य दूध–दही, घी, क्रीम, पनीर आदि से काफी आर्थिक लाभ उठा रहे है और उपरोक्त By products भी बनाया जाये तो गोपालन आर्थिक रूप से अति लाभकारी होगा और बेरोजगारी की समस्या दूर होगी, स्वास्थ लाभ होगा और सामाजिक शान्ति भी होगी। गौमूत्र अर्क का नियमित सेवन से कैंसर, हार्ट, शुगर आदि रोगों में रामवाण का काम करता है। आशा है उपरोक्त जानकारी को अमल में लाने से गोपालन को बढ़ावा मिलेगा।

आर्यसमाज का कर्त्तव्य कर्म

—स्वामी स्वतंत्रतानन्द

महर्षि दयानन्द जी के वैदिक धर्मप्रचार के पूर्व आर्यों के जीवन पर दृष्टि डाली जाय तो उस अवस्था और वर्तमान अवस्था में महान् अन्तर है यथा—

(१) वैदिक धर्मप्रचार से पूर्व वैदिकधर्मियों के उपास्य देव अनेक थे। और उनके गुण, आकृति भिन्न—भिन्न मान कर उपासना विषय में कलह होती थी। विदेशी विद्वान् भी नानादेववाद की ओट में पूर्व आचार्यों को और वैदिक ऋषियों को असभ्य और अशिक्षित मानते थे। जब ऋषि ने गजघण्टा न्याय से प्रतिपादन किया कि वेद एक ईश्वर को उपास्य और उसी की उपासना बतलाते हैं और वह सच्चिदानन्दस्वरूप, जगत् का कर्त्ता, संहर्त्ता तथा निराकार, निर्विकार आदि गुणयुक्त हैं। उसके पश्चात् आर्य जनता ने इसी सिद्धान्त को स्वीकार किया और इस समय वेद का यही सिद्धान्त माना जाता है।

(२) आर्यसमाज के प्रचार के पूर्व आर्यों के धर्मग्रन्थ अनेक थे। यह कहा जाये कि संस्कृत का कोई श्लोक वा वाक्य पढ़कर यदि कोई कह देता था कि यह धर्मग्रन्थ का वाक्य है तो वह वाक्य मान्य समझा जाता था। इसी कारण पुराण, उपपुराण, तन्त्रग्रन्थ आदि भी धर्मग्रन्थ बन गये। ऋषि दयानन्द ने अपने प्रचार में इस बात की घोषणा की कि धर्मग्रन्थ केवल संहिताभाग वेद ही हैं। वही स्वतः प्रमाण हैं। पुराण आदि धर्मग्रन्थ नहीं। स्मृति, ब्राह्मण आदि भी परतः प्रमाण हैं। आज वैदिकधर्मी इसी सिद्धान्त के अनुसार वेद को स्वतः प्रमाण मान कर धर्मग्रन्थ मानते हैं। अन्य पुस्तकों को वेदानुकूल कहने का प्रयास तो करते हैं, किन्तु उनको धर्मग्रन्थ कहने का साहस किसी को नहीं।

(३) आर्यसमाज के प्रचार से पहले वर्णव्यवस्था जन्म के आधार पर थी और स्त्री वा शूद्र को वेद पढ़ने तथा सुनने का निषेध था। आर्यसमाज के प्रवर्तक ने इसके विरुद्ध वर्ण—व्यवस्था को गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर स्वीकार किया और स्त्री तथा शूद्र को भी वेद पढ़ने का पूर्ण अधिकार दिया। उनके प्रचार का यह परिणाम हुआ कि अनेक सज्जन जिन्हें पूर्व सिद्धान्तानुसार वेद पढ़ने का अधिकार न था, त्रिवेदी[१] आदि उपाधियों से विभूषित होकर वेद के भाष्यकार हो गये। और अनेक स्त्रियाँ वेद—मन्त्र पढ़ती हैं तथा हवनादि कृत्य करती दृष्टिगोचर होती हैं। इस परिवर्तन में ऋषि का ही हाथ है।

(४) आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व आर्यों में अनेक व्यक्तियों व बिरादरियों को अछूत माना जाता था। उनके स्पर्श से आर्य स्नान करते थे। अनेक मार्गों पर उनके आने का प्रतिबन्ध था। कहीं कहीं उनकी दृष्टि से भी भ्रष्ट होने की भावना थी। इसी प्रकार उनके हाथ की वस्तु के खाने पीने का तो प्रश्न ही क्या? ऋषि दयानन्द ने अपने प्रचार में इस बात पर बल दिया कि कोई भी अछूत नहीं है। शुद्ध सात्विक भोजन सबके हाथ का खाया जा सकता है। जिसमें पढ़ने का सामर्थ्य है और वेद समझने की बुद्धि है उसको पढ़ने का अधिकार है। मलिन वस्तु के अतिरिक्त किसी व्यक्ति के स्पर्श से कोई भ्रष्ट नहीं होता। इस प्रचार का फल यह हुआ कि आर्य्यों से अछूतपन मिट गया।

इस समय सरकार भी अछूतपन मिटाने में तत्पर है और भारतवर्ष के उच्च पदों पर भी इन अछूतों मे से कोई आरूढ़ हैं। यदि नाम लेने हों तो अनेक नाम लिये जा सकते हैं। डा0 भीमराव अम्बेदकर, श्री जगजीवनराम केन्द्रीय सभा में, श्री गिरधारीलाल संयुक्त प्रान्तीय सभा में, श्री पृथिवी सिंह आजाद पंजाब धारासभा में।

(५) भारतवर्ष में ऋषि दयानन्द प्रथम पुरुष थे जिन्होंने सबसे प्रथम स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया और विदेशी राज्य की निन्दा करते हुए स्वराज्य की प्रशंसा की और भारत की दशा का दुःख पूर्वक वर्णन करते हुए आर्यों को पुनः स्वराज्य–प्राप्ति की प्रेरणा की और अपनी प्रार्थनाओं में भी चक्रवर्ती राज्य की परमात्मा से याचना की और आर्य्यों के दोषों को बताकर उनसे पृथक् होने का आदेश दिया। उसके पश्चात् अनेक सज्जनों ने इस मार्ग को अपनाया और इस प्रयत्न को करते हुए तन, मन धन से बलि भी दी। जिसका परिणाम हम आज भारत को स्वतन्त्र देखते हैं। इत्यादि अनेक बातें और भी हैं जिनका उल्लेख किया जा सकता है। जिन का आदेश ऋषि ने किया था उनमें से औरों को छोड़कर विधर्मियों को पुनः आर्य बनाने की आज्ञा विशेष उल्लेखनीय है। उनसे पूर्व आर्य मुसलमान, ईसाई बनते थे, किन्तु कोई ईसाई और मुसलमान पुनः आर्य न बन सकता था उन्होंने अपने जीवन में मुहम्मद उमर नामी सज्जन को देहरादून में अलखदारी का नाम देकर आर्य्य बनाया। उनकी आज्ञा को मानकर ही आर्यसमाज ने लाखों ईसाई और मुसलमानों को वैदिक धर्म की दीक्षा देकर पुनः आर्य बनाने का सफल प्रयत्न किया।

(६) इस समय जिन कामों को करने की आवश्यकता है मेरी सम्मति में दो कार्य आवश्यक और सार्थक भी हैं–

(क) **ऋषि दयानन्द ने जैसे स्वराज्य**–प्राप्ति के साधन लिखे थे वैसे स्वराज्य रक्षा के साधन भी लिखे हैं। उनमें सत्य, धर्मपरायणता, न्यायप्रियता, धन–अलोलुपता, सदाचार आदि साधन हैं। इस समय स्वराज्य–प्राप्ति पर जहाँ इन गुणों की वृद्धि होनी चाहिए थी वहाँ ह्रास सुना जाता है। मन्त्रियों से लेकर साधारण कर्मचारी तक धन– लोलुपता के कारण घूस चोरबाजारी हो रही है। सत्य के स्थान पर असत्य की प्रधानता है। न्याय के भवन में पक्षपात का निवास है। सदाचार के स्थान पर दुराचार पाया जाता है। ये बातें प्रत्येक के मुख पर हैं। उदाहरण के लिए प्रत्येक प्रान्त के मन्त्रियों के दोषों की पड़ताल के लिए कमेटियाँ बनाना यही सिद्ध करता है। इसलिए आर्यों का कर्त्तव्य है कि वे ऋषि के आदेश को मानकर अपने जीवन को उन्नत बनाते और दिखाते हुए इस चोरबाजारी और अन्याय के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करें। "कार्यं व साधयामि देहं व पातयामि" की दृढ़ धारणा करके इस क्षेत्र में आयें।

(ख) अब तक जैसे ईसाइयों और मुसलमानों को आर्य बनाया था, यह समय अधिक परिश्रम करने का है। इस कार्य को आर्यसमाज ही कर सकता है। उनको आर्य बना कर आर्यत्व के पूर्ण अधिकार देना, अर्थात् उनसे रोटी बेटी का व्यवहार आरम्भ करना चाहिए और उनसे सब भेद भाव मिटा कर जो भिन्नता है उसे दूर कर देना चाहिए।

महर्षि दयानन्द के स्वर्गारोहण के उपलक्ष्य में उत्सव मनाते हुए यदि आदेशों को मानकर हम यह कार्य करें तब ही उत्सव की सफलता है। अन्यथा भाषणमात्र से सफलता न होगी।

भारतीय स्वतंत्रता को आर्यसमाज की देन

राष्ट्र और राष्ट्रीयता के विषय में राज्यशास्त्र के विशेषज्ञों ने अनेक ग्रन्थों का निर्माण किया है और उनमें विविध प्रकार के प्रचलित राजनैतिक वादों का सोपपत्तिक प्रतिपादन किया गया है। अर्वाचीन भारत में राष्ट्र और राष्ट्रीयता की कल्पना का श्रेय आचार्य दयानन्द और उनके अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को है। कल्पना ही नहीं, राष्ट्र के समुन्नत, सुविकसित, सुदृढ़ और सुविस्तृत बनाने के लिए आवश्यक सभी बातों का उन्होंने उल्लेख किया है। भारत की स्वतंत्रता से सम्बन्ध रखनेवाली कौन–सी ऐसी बात है जिस पर ऋषि दयानन्द ने लेखनी नहीं उठाई? भारतीय राजनीति के प्रत्येक पहलू पर उन्होंने विचार किया। देश की तत्कालीन और सम्भावित सभी समस्याओं की ओर उनका ध्यान गया। राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस ने १९२७ में पूर्ण स्वराज्य को अपना ध्येय स्वीकार किया और सन् १९२९ में लाहौर में उसकी प्राप्ति के लिए संघर्ष करने की घोषणा की। इससे पूर्व १९१६ में लखनऊ–कांग्रेस में लोकमान्य तिलक ने 'स्वराज्य' के जन्मसिद्ध अधिकार की घोषणा करते हुए उसे प्राप्त करने का दावा किया था। उससे भी पूर्व १९०६ में दादा भाई नौरोजी ने 'स्वराज्य' शब्द का उच्चारण किया था। किन्तु आचार्य दयानन्द ने, जब 'स्वराज्य' का विचार भी किसी के मस्तिष्क में नहीं उपजा था "अन्य देशवासी राजा हमारे देश में न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न रहें" इन शब्दों में पूर्ण स्वराज्य की घोषणा की थी। उस समय भारत के लोग सरकार से थोड़ी–सी सुविधाएँ पाकर ही सन्तुष्ट हो जाना चाहते थे, किन्तु महर्षि ने अपने देशवासियों को चेतावनी दी कि "कोई कितना ही कहे परन्तु जो स्वेदशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तरों के आग्रह–रहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर माता–पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता।" सामयिक परिस्थितियों के कारण असन्तुष्ट लोग, जो वर्तमान शासन को दोषपूर्ण कहते हुए उसकी तुलना में ब्रिटिश शासन को श्रेयस्कर मानते हैं और कभी–कभी यहाँ तक कह बैठते हैं कि 'इससे तो गुलामी ही अच्छी थी' ऋषि के उपर्युक्त शब्दों में निहित उत्कृष्ट भावना को देखें। स्वयं वेद ने स्वराज्य के महत्त्व को दर्शाते हुए कहा है– **'स तत्स्वराज्यमियाय यस्मान्नान्यत्परमस्ति भूतम्'** अर्थात् स्वराज्य से बढ़कर कोई पदार्थ नहीं।

आज का संसार महर्षि दयानन्द को एक धर्मप्रचारक और समाजसुधारक के रूप में ही जानता और मानता है। बहुत कम लोग ऐसे हैं जो उनकी राष्ट्रीयता अथवा देशभक्ति से परिचित हैं। आज जब कि अंग्रेज भारत को छोड़कर चले गए और भारतीय जनता स्वतन्त्रता का रसास्वादन कर रही हैं, कितने लोग ऐसे हैं जो जानते हैं कि एक बार एक अंग्रेज क्लेक्टर ने स्वामी जी का भाषण सुनने के बाद कहा था कि "यदि आपके भाषण पर लोग चलने लग जाएँ तो इसका परिणाम यह होगा कि हमें अपना बधना – बोरिया बाँधना पड़ेगा!"

१९११ की जनसंख्या के अध्यक्ष श्री ब्लण्ट ने आर्यसमाज की आलोचना करते हुए लिखा थाः

"The Arya Samajia Doctrine has a Patriotic side. The Arya Doctrine and Arya Education alike sing the glories of Ancient India and by so doing arouse a feeling of national pride in its disciples who are made to feel that their country's history is not a tale of humiliation. Patriotism and politics are not synonymous but the arousing of an

interest in national affairs is a natural result of arousing national pride."

"आर्यसमाज के सिद्धान्तों में स्वदेश–प्रेम की प्रेरणा है। आर्य सिद्धान्त और आर्य शिक्षा दोनों समान रूप से भारत के प्राचीन गौरव के गीत गाते हैं और ऐसा करके अपने अनुयायियों में राष्ट्रीय गौरव की भावना को जागृत करते हैं। इस शिक्षा के कारण ही वे समझते हैं कि हमारे देश का इतिहास पराभव की कहानी नहीं है। देशभक्ति और राजनीति पर्यायवाची नहीं हैं, किन्तु राष्ट्रीय कार्यों में प्रवृत्ति का होना राष्ट्रीय भावना का स्वाभाविक परिणाम है।"

मिस्टर ब्लण्ट के कथन की यथार्थता को जानने के लिए महर्षि के इन शब्दों पर ध्यान देना काफी है। "यह आर्यावर्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा देश नहीं है। जितने भूगोल में देश हैं वे सब इसी देश की प्रशंसा करते हैं। आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहेरूपी विदेशी छूते ही सुवर्ण अथवा धनाढ्य हो जाते हैं। सृष्टि से लेकर पाँच सहस्र वर्षों से पूर्व–पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल से सर्वोपरि एकमात्र राज्य था। अन्य देश मे माण्डलिक अर्थात् छोटे–छोटे राजा रहते थे।" वास्तव मे ऋषि दयानन्द अपने देशवासियों में यह भावना भरना चाहते थे कि तुम्हारा अतीत अत्यन्त गौरवपूर्ण था। मिस्टर ब्लण्ट के कथनानुसार इस भावना के जागृत होने का अनिवार्य परिणाम यही है कि लोगों में अपने खोये हुए वैभव को फिर से पाने की लालसा पैदा हो। हुआ भी वही। लोगों में अपनी गुलामी के प्रति घृणा और स्वतंत्र होने की इच्छा को प्रोत्साहन मिला। किसी भी मामले में विदेशियों के सामने सिर झुकाना ऋषि को सह्य नहीं था। वह लिखते हैं कि "जब अपने देश में सत्य विद्या, सत्य धर्म, ठीक–ठीक सुधार और परमयोग की सब बातें थीं और अब भी हैं, तब विचारिए कि थियोसोफिस्टों को एतेद्देशवासियों के मत में मिलना चाहिए या आर्यावर्तियों को थियोसोफिस्ट होना चाहिए।" ऋषि के स्वदेश–प्रेम के सामने फ्रांस, अमेरिका और स्विट्जरलैंड से प्रेरणा पानेवाले वर्तमान भारतीय देशभक्तों की राष्ट्रीयता कितनी फीकी है ! वास्तव में स्वदेशी भाषा, भाव, साहित्य, संस्कृति के प्रेम के विना स्वदेश–प्रेम बिल्कुल थोता और निर्जीव है। मिस्टर ब्लण्ट ने आगे लिखा है–

"Dayanand was not merely a religious reformer, he was also a great patriot. It would be fair to say that with him religious reform was a mere means to national reform."

"दयानन्द केवल धार्मिक सुधारक ही नहीं थे। वह बहुत बड़े देशभक्त भी थे। यह कहना ठीक ही होगा कि उन्होंने सामाजिक सुधार को राष्ट्रीय सुधार के साधनरूप में ही अपनाया था।"

मिस्टर ब्लण्ट ने बहुत ही पते की बात कही है। इसमें सन्देह नहीं कि ऋषि दयानन्द ने पाखंडों और परस्पर–विरोधी सिद्धान्तों का खंडन किया कि इनके रहते हुए 'परस्पर एकमत, एकता, मेल–मिलाप या सद्भाव न रहकर ईर्ष्या, द्वेष, विरोध, मतभेद और लड़ाई–झगड़ा' ही होगा। ऋषि ने बड़े दुःख के साथ लिखा कि "विदेशियों के आर्यावर्त्त में राज्य होने के कारण ही आपस की फूट, मतभेद आदि हैं। जब भाई–भाई आपस में लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।" हमारी जिन कमजोरियों से विदेशियों ने लाभ उठाया है उन्हें दूर करना ही ऋषि दयानन्द के खण्डनात्मक कार्य का ध्येय था।

ब्राह्मसमाज के खंडन के प्रकरण को देखने पर यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है। ब्राह्मसमाज और प्रार्थनासमाज का इतना अधिक खंडन ऋषि ने केवल उनके विदेशीपन के कारण ही किया प्रतीत होता है। वह लिखते हैं–

"इन लोगों में स्वेदश–भक्ति बहुत न्यून है। अपने देश की प्रशंसा व पूर्वजों की बड़ाई करना तो दूर रहा, उसके स्थान पर भरपेट निन्दा करते हैं। ब्रह्मादि ऋषियों का नाम भी नहीं लेते, प्रत्युत ऐसा कहते हैं कि बिना अंग्रेजों के सृष्टि में आज–पर्यन्त कोई विद्वान् ही नही हुआ।

आर्यावर्तीय लोग सदा से मूर्ख चले आये हैं। उनकी उन्नति कभी नहीं हुई।" इनकी भर्त्सना करते हुए वह लिखते हैं कि "भला जब आर्यावर्त में उत्पन्न हुए हैं और इसी का अन्न–जल खाया–पिया, अब भी खाते–पीते हैं, तब अपने माता–पिता, पितामह आदि के मार्ग को छोड़कर दूसरे विदेशी मतों पर अधिक झुक जाना, ब्राह्मसमाजी और प्रार्थनासमाजियों का एतद्देशस्थ संस्कृत–विद्या से रहित अपने को विद्वान् प्रकाशित करना, इंग्लिश भाषा पढ़के पण्डिताभिमानी होकर झटिति एक मत चलाने में प्रवृत्त होना मनुष्यों का स्थिर और बुद्धिकारक काम क्योंकर हो सकता है?" कितने स्वदेशाभिमानी थे ऋषि दयानन्द !

यहाँ पर महर्षि दयानन्द ने ब्राह्मसमाजियों के विदेशी मत ईसाइयत की ओर झुकाव होने के कारण ही उन्हें इतना फटकारा था। शायद इस और ऐसी अन्य समीक्षाओं के कारण १९०१ में जनसंख्या के अध्यक्ष मिस्टर बर्न ने लिखा है–

"Dayanand feared Islam and Christianity because he considered that the adoption and adaptation of any foreign creed would endanger the national feelings he wished to foster."

"ऋषि दयानन्द को आशंका थी कि इस्लाम और ईसाईयत जैसे विदेशी मतों के अपनाने से देशवासियों की राष्ट्रीय भावनाओं को जिनको वह जागृत करना चाहते थे, ठेस पहुँचेगी।"

आर्यसमाज और राजनीतिः "जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्य के अनुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नही तो कुछ हाथ न लगेगा, क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है और आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता।"

आर्यसमाज को एक साम्प्रदायिक संस्था माननेवाले लोग ऋषि के उपर्युक्त वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे तो उन्हें पता लगेगा कि आर्यसमाज एक सम्प्रदाय नहीं, अपितु सार्वभौम संस्था है जिसका मुख्य उद्देश्य "संसार का उपकार करना है अर्थात्, शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।" इस महान् उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त आर्यसमाज के साथ मिलने की प्रेरणा उपर्युक्त लेख में है। महर्षि ने आर्यसमाज को देश की उन्नति के लिए सबसे अच्छी संस्था माना है। कहना न होगा कि देश की उन्नति का अर्थ राष्ट्र का सर्वाङ्गीण विकास है।

प्रायः सुनने में आता है कि आर्यसमाज विशुद्ध धार्मिक संस्था है। वास्तव में आर्यसमाज एक धार्मिक संस्था है। परन्तु जब हम यह कहते हैं तो हमारे सामने धर्म का वह रूप होता है जिसे महर्षि दयानन्द ने अपनाया है। **'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः'**– धर्म वह है जिससे अभ्युदय तथा निःश्रेयस दोनों की प्राप्ति हो। धर्म के इन्ही अर्थों मे आर्यसमाज एक धार्मिक संस्था है। 'जिस धर्म का स्वरूप इतना व्यापक हो', अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के शब्दों में, 'राजनीति ही क्या, संसार की कोई भी नीति उसकी सीमा से बाहर नही रह सकती।' वैदिक धर्म अधूरा नहीं है। राजनीति उसका आवश्यक अंग है। राजनीति सत्यार्थप्रकाश के मुख्य विषयों मे है। उसमे ऋषि ने राजनीति को राजनीति के अतिरिक्त राजधर्म के नाम से भी पुकारा है, क्योंकि वे राज्यशास्त्र को धर्मशास्त्र के ही अन्तर्गत मानते थे। मनुस्मृति के अध्ययन से यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है कि राजनीति धर्म की विविध शाखाओं में से एक है।

आर्यसमाज का विश्वास है कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।" जब ऐसा है तो मानना पड़ेगा कि आर्यसमाज जिसकी नींव वेद पर है, वेद की सभी विद्याओं का प्रसार एवं प्रचार करनेवाली संस्था है। वेद में राजनीति–सम्बन्धी

ज्ञान की कमी नहीं है। सूक्त के सूक्त राजनीति से भरे हुए हैं।

यहाँ तक तो रही सिद्धान्त की बात। सक्रिय राजनीति में भी आर्यसमाज पीछे नही रहा। Indian Unrest के लेखक वेलेन्टाइन शिरोल ने ठीक ही लिखा था कि जहाँ–जहाँ आर्यसमाज का जोर है, वहाँ–वहाँ राजद्रोह प्रबल है। सर्वप्रथम १८७५ में मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना हुई थी। उस समय कांग्रेस या किसी अन्य राजनैतिक संस्था का जन्म भी नहीं हुआ था। उक्त आर्यसमाज की राष्ट्रीय प्रवृत्तियों के कारण उसके अधिकारियों को उसी वर्ष जेल की हवा खानी पड़ी थी। आर्यसमाज और उसकी संस्थाएँ ब्रिटिश सरकार के लिए सबसे भारी खतरा समझी जानी लगी। गुरुकुल कांगड़ी को तो विद्रोह का केन्द्र समझा जाता था। आर्यसमाज और विद्रोह पर्यायवाची बन गए। ब्रिटिश भारत और रियासतों में सर्वत्र आर्यसमाज को सरकार का कोपभाजन बनना पड़ा। समाज–मन्दिरों पर से ओम् के झंडे तक उतर गए। इतना दमन होने पर आर्यसमाज दिन–प्रतिदिन आगे बढ़ता ही गया। भारतीय स्वतन्त्रता–संग्राम में श्री श्यामजीकृष्ण वर्मा, लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, सरदार भगतसिंह आदि के नेतृत्व में जो भाग आर्यसमाज ने लिया वह विश्वविदित है। इतिहास का विद्यार्थी उसे भुला नहीं सकता।

आर्यसमाज का कार्यक्रम चहुँमुखी था। उसके ऊपर भारत ही नही, समस्त संसार के धार्मिक तथा सामाजिक सुधार का भी भार था। राजनीति उसके विशाल कार्यक्रम का एक अंग था। उसकी सारी शक्ति एक ही दिशा में नहीं लग सकती थी। उसी समय एक दूसरी संस्था का निर्माण किया जा रहा था जिसका एकमात्र लक्ष्य देश की राजनैतिक उन्नति ही था। जबकि आर्यसमाज को सब ही विषयों पर ध्यान देना था, कांग्रेस ने केवल राजनीति में काम किया। आर्यसमाज ने अपने कार्यक्रम का यह भाग कांग्रेस को सौंप दिया। जनता उसके पीछे हो ली। कालान्तर में आन्दोलन की इस चहल–पहल में लोग क्रान्ति के जन्मदाता और स्वराज्य के प्रेरक आर्यसमाज को भूल गए। किन्तु आर्यसमाज निश्चिन्त होकर नहीं बैठा रहा। यद्यपि उसने देश के ब्राह्म शत्रुओं से युद्ध करने का कार्य कांग्रेस के कन्धों पर छोड़ दिया, तथापि अन्दर के शत्रुओं से उसका संघर्ष जारी रहा। आपस की फूट, छूतछात, अविद्या, सामाजिक कुरीतियाँ, अन्धविश्वास आदि शत्रुओं से वह सदा टक्कर लेता रहा। पारस्परिक मतभेदों को दूर करने के लिए उसने शुद्धि और संगठन की नींव डाली, छूतछात को दूर करने के लिए उसने अछूतोद्धार का बीड़ा उठाया, अविद्या के नाश के लिए स्कूलों और कॉलेजों तथा गुरुकुलों का जाल बिछाया, सामाजिक कुरीतियों के नाश के लिए अत्यन्त प्रचंड आन्दोलन किया, अन्धविश्वासों को मिटाने के लिए उसने तर्क का आश्रय लिया, देश के आर्थिक विकास के लिए उसने स्वदेशी के प्रयोग तथा गोरक्षा–आन्दोलन को जन्म दिया, राष्ट्र की एकता के लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार किया आदि–आदि। एक ओर कांग्रेस का संघर्षात्मक काम जारी था तो दूसरी ओर आर्यसमाज का रचनात्मक कार्यक्रम चल रहा था। कौन कह सकता है कि आर्यसमाज के रचनात्मक कार्यक्रम से कांग्रेस के कार्यक्रम को बल नहीं मिला? अब तो गोसेवा संघ, हरिजन सेवक संघ, हिन्दी साहित्य सम्मेलन आदि नई–नई संस्थाएँ आर्यसमाज के कार्यक्रम के एक–एक अंग को लेकर खड़ी हो गई हैं। किन्तु इन सबका श्रीगणेश एक–साथ आर्यसमाज ने किया–इससे कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति इन्कार नहीं कर सकता। यह रचनात्मक कार्यक्रम ही भारत की राष्ट्रीयता को आर्यसमाज की सबसे बड़ी देन है। आर्यसमाज राष्ट्रीय संस्था अवश्य है, किन्तु वह राजनैतिक दल नहीं।

–राजधर्म से साभार

SCIENTIFIC EXPERIMENTAL STUDY OF AGNIHOTRA/HAVAN/YAJYAN

Acharya Ashish Arya, Darshanacharya
Tapovan Ashram, Dehradun

Maharishi Dayanand Saraswati in the third chapter(Samullas) of Satyarth Prakash answers about scientific nature of havan ."Those who know about matter know it for sure that matter never dies. Matter under the fire doesn't get destroyed. It transforms from one state to another state. Fire enhances the character of matter. Only scent has not the disintegrating power to rid the house of its impure air , and replace it by the fresh pure air. It is fire alone which possesses that power, whereby it breaks up the impurities of the air , and reduces them to their component parts, which, getting lighter, are expelled from the house and replaced by fresh air from outside."

He further says**" In the 'Golden Days' of India, saint and seers, princes and princesses, king and queens, and other people used to spend a large amount of time and money in performing and helping others to perform Homa ; and so long as this system lasted, India was free from disease and its people were happy. It can become again, if the same system were revised."**

Air pollution is a major environmental risk to health. By reducing air pollution levels, countries can reduce the burden of disease from stroke, heart disease, lung cancer, and both chronic and acute respiratory diseases, including asthma. The lower the levels of air pollution, the better the cardiovascular and respiratory health of the population will be, both long- and short-term. Outdoor air pollution is a major environmental health problem affecting everyone in developed and developing countries alike.

WHO estimates that some 80% of outdoor air pollution-related premature deaths were due to ischemic heart disease and strokes, while 14% of deaths were due to chronic obstructive pulmonary disease or acute lower respiratory infections; and 6% of deaths were due to lung cancer. Ambient (outdoor air pollution) in both cities and rural areas was estimated to cause 3.7 million premature deaths worldwide per year in 2012; this mortality is due to exposure to small particulate matter of 10 microns or less in diameter (PM_{10}), which cause cardiovascular and respiratory disease, and cancers.

In addition to outdoor air pollution, indoor smoke is a serious health risk for some 3 billion people who cook and heat their homes with biomass fuels and coal. Some 4.3 million premature deaths were attributable to household air pollution in 2012. Almost all of that burden was in low-middle-income countries as well.

Six Common Air Pollutants, known as "criteria pollutants" are particulate matter, ground level ozone, carbon monoxide, sulfur oxides, nitrogen oxides.

Summary of Health Effects of Basic Air Pollutants:

Carbon Monoxide-Poor reflexes, Ringing in the ears, Headache, Dizziness, Nausea, Breathing Difficulties, Drowsiness, Reduced work capacity, Comatose state (can lead to death)

Lead (Pb)-Kidney Damage, Reproductive system damage, Nervous system damage (including brain dysfunction and altered neurophysical

behaviours)

Oxides of Nitrogen(NOX)- Increased risk of viral infections, Lung irritation (including pulmonary fibrosis and emphysema),Higher respiratory illness rates, Airway resistance, Chest tightness and discomfort, Eye burning, Headache

Ozone (O_3)-Respiratory system damage (lung damage from free radicals),Reduces mental activity, Damage to cell lining (especially in nasal

passage),Reduces effectiveness of the immune system, Headache ,Eye irritation, Chest discomfort, Breathing difficulties, Chronic lung diseases (including asthma and emphysema),Nausea

Sulphur dioxide (SO_2)-Aggravates heart and lung diseases, Increases the risk for respiratory illness (including chronic bronchitis, asthma, pulmonary emphysema),Cancer (may not show for decades after exposure)

Respirable Particulate Matter(PM10)- Respiratory illness (including chronic bronchitis, increased asthma attacks, pulmonary emphysema),Aggravates heart disease

Results of Some Recent Experiments on Havan:

EXPERIMENT -1

Prof. Pushpendra K. Sharma, S. Ayub, C.N.Tripathi, S.Ajnavi, S.K. Dubey (Professors, Civil & Env. Engineering, HCST, Mathura & AMU, Aligarh, UP, INDIA) conducted yajyan, in laboratory and artificially generated pollution conditions. After taking 5-10 readings and studying all the different methodologies, using almost 324 Ahuties yajyan with clarified cow butter (ghee),Pipal wood (Ficusr eligiosa),Havan samagri (kapurkachari, gugal, nagarmotha, balchhaar or jatamansi, narkachura, sugandhbela, illayachi, jayphal, cloves and dalchini etc.),they came across a conclusion that the air pollution of criteria pollutants can be effectively reduced opting column method using locally available materials and without adding any chemicals. Under the natural lab conditions and after creating local and artificial indoor air pollution it was noticed that Sox, Nox were considerably reduced by almost 51%, 60%respectively more by yajyan when compared without yajyan and both RSPM & SPM were also found to be reduced by 9% & 65% respectively more as compared to the condition without yajyan. Although the RSPM & SPM concentrations were still there but not to the extent of unhygienic conditions. The odor and smell of the Havan hall was not at all objectionable.

EXPERIMENT -2

A group of scientists led by Dr. Manoj Garg, Director, Environmental and Technical Consultants and the Uttar Pradesh pollution control board conducted experiments during the Yajyan at Gorakhpur, U.P. These experiments were set up at about 20 meters east from the Yajyanshala. The samples of 100 ml each of water and air collected from the surroundings were analyzed using high volume Envirotech APM-45 and other sensitive instruments. :

In Air Samples (unit mg per average sample)

Instant	Level of Sulphur dioxide	Level of Nitrous Oxide
Before Yajyan	3.36	1.16
During Yajyan	2.82	1.14
After Yajyan	0.80	1.02

Bacteria Count in Average Water Samples

Before Yajyan	4500
During Yajyan	2470
After Yajyan	1250

Minerals in the Ash (Bhasm) of Yajyan

Phosphorous 4076 mg per kg. Potassium 3407 mg per kg. Calcium 7822 mg per kg. Magnesium 6424 mg per kg. Nitrogen 32 mg per kg. Quispar 2% W/W These results clearly support the claims made about the role of Yagna in control of air pollution. The Deputy Director, Agriculture had submitted a technical report based on such results, recommending the use of Yagna's ash as an effective fertilizer.

EXPERIMENT- 3

A study of Agnihotra yajyan effect on environment and plants was performed in New English School, Ramanbaug by Pranay Abhang

(Teaching Associate, Institute of Bioinformatics and Biotechnology,Savitribai Phule Pune University,Pune) and Manasi Patil under the guidence of Dr.Pramod Moghe (Rtd.Sr.Scientist NCL,Pune) and Dr.G.R.Pathade(Principal,H.V.Desai College, Pune) with the support of Dr.R.G.Pardeshi, Mr.Purandare and Mr.Pathak.

To study the effect of Agnihotra on environment and plants, Agnihotra was performed in the School daily for the period of 8 days and experiments were carried out. The change in light intensity was measured before and after Agnihotra with help of lux meter. Agnihotra has tremendous effect on the environment. To observe the effect of Agnihotra fumes on microbial count in surrounding environment, the colony count was taken before and after Agnihotra. The result showed significant decrease in colony count after Agnihotra, which means Agnihotra reduces microbial load in the air. School is located on one of the busiest roads of Pune. Heavy traffic moves around the school. It was seen that SOx levels dropped significantly after performing Agnihotra while NOx levels remain the same clearly stating that it can keep the pollutants in the surrounding air under check. Water released from houses, factories etc. contain many pathogens which lead to diseases ,When Agnihotra ash was added to this water it was found that the biological oxygen demand was decreased and the microbial count reduced considerably. It was also observed Agnihotra ash when used for plants,there was increase in plant growth. With minimum expenditure on the yajyan one can relish enormous benefits.For the more details of this research visit to the given link below :

http://www.agnihotra.com.au/wp-content/uploads/2015/08/Scientific-study-of-Vedic-Knowledge-Agnihotra.pdf

Dr.Satyaprakash, DSC has written a book in English entitled "AGNIHOTRA OR AN ANCIENT ANTI-POLLUTION PROCESS" giving the scientific point of view. Dr.Satyaprakash was the Head of the Department of Chemistry in Allahabad University. He later on became a monk and was known as Swami Satyaprakashanand. It is humbly suggested to readers to study above mentioned book to understand more scientific aspects of Agnihotra/Havan.

पुरोहितों की आवश्यकता

देहरादून जनपद की निम्न आर्य समाजों के लिए व्यवहार कुशल, मृदुभाषी पुरोहित की आवश्यकता है। नि:शुल्क आवास व्यवस्था के साथ मानदेय कर्मकाण्डीय योग्यता व अनुभवानुसार देय होगा।

आर्य समाज का नाम	**सम्पर्क सूत्र एवं मोबाईल नम्बर**
आर्य समाज मसूरी	श्री नरेन्द्र साहनी, 9837056165
आर्य समाज चकराता	श्री एस.एस. वर्मा, 9410950159
आर्य समाज धर्मपुर	श्री शत्रुघ्न कुमार मौर्या, 9412938663

With Best Compliments From :

KAMAL PLASTOMET

930/1, Behrampur Road, Village Khandsa, Gurgaon-122 001 (Haryana), Tel. : 0124-4034471, E-mail : krigurgaon@rediffmail.com

ओ३म्

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून में 21 दिवसीय चतुर्वेद परायण यज्ञ पर सम्पादकीय रिपोर्ट

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून में 21 मार्च, 2016 को 21 दिवसीय चतुर्वेद पारायण यज्ञ सोत्साह सम्पन्न हुआ। यह यज्ञ वैदिक जगत् के प्रमुख श्रद्धावान् याज्ञिक स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी की प्रेरणा से, आयोजित हुआ जिसके ब्रह्मा आर्यजगत् के प्रमुख विद्वान् आचार्य विद्यादेव जी थे। प्रातः 9.00 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई।

महात्मा आनन्द स्वामी जी की प्रेरणा और बावा गुरमुख सिह जी के दान से स्थापित यह वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून नगर से 6 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह स्थान चारों ओर आबादी के बीच है जहां बाहर कोलाहल व व्यस्त जीवन रहता है। इससे 2 किमी. की दूरी पर पर्वतों में वनों के बीच शान्तिपूर्ण स्थान पर एक गोशाला स्थित है। इससे और आगे नीचे के मुख्य आश्रम से लगभग 3.5 किमी. की दूरी पर तपोवन नामक वास्तविक तपोभूमि है जहां यह चतुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ है। कई एकड़ के विशाल सुरम्य व शान्त भूखण्ड में स्थित यह तपोभूमि साल के ऊंचे–ऊंचे वृक्षों से आच्छादित है और पूर्णतया शान्त है जहां ग्रीष्म ऋतु में भी शीतल वायु का स्पर्श प्रसन्नता प्रदान करता है। इस तपोभूमि के आसपास न किसी के निवास हैं, न वाहनों की आवाजाही और न ही किसी प्रकार का कोलाहल है। इस पर्वतीय तपोभूमि पर विगत दिनों एक भव्य विशाल हाल का निर्माण किया जा चुका है। यहां कुछ पुरानी कुटियायें भी बनी हुई हैं जिसमें स्वामी योगानन्द सरस्वती, महात्मा आनन्द स्वामी जी, महात्मा प्रभु आश्रित जी, महात्मा दयानन्द जी आदि अनेक योगियों ने समय–समय पर योग साधनायें की हैं। यहां स्थाई यज्ञशाला न होने के कारण स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी व याज्ञिक साधकों ने एक यज्ञशाला की आवश्यकता अनुभव की व इसे शीघ्र निर्मित कराने का निर्णय किया। तपोवन आश्रम के सचिव इं. श्री प्रेम प्रकाश शर्मा ने यज्ञशाला के लिए अपनी ओर से 1 लाख रूपये का दान देने की घोषणा की। इसका अनुसरण करते हुए स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती सहित डा. वेदप्रकाश गुप्ता, श्री विजय कुमार गोयल, श्री विनीश आहूजा जी दिल्ली आदि ने भी एक–एक लाख रूपये यज्ञशाला के लिये दान देने की घोषणायें कीं। कईयों ने 51 हजार व अन्य लोगों ने 21 व 11 हजार रूपये दान देने के संकल्प किये। आशा है कि शेष धन की व्यवस्था भी हो जायेगी और पर्वतीय तपोभूमि में शीघ्र ही एक भव्य यज्ञशाला बन कर तैयार हो जायेगी। यज्ञशाला के निर्माण व दान सम्बन्धी प्रकरण के बाद भजन, कविता पाठ, गीत व प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ। डा. वेद प्रकाश गुप्ता जी, श्री के. के भाटिया, श्री आनन्द मुनि, बहिन राज सरदाना जी, श्री जय भगवान शर्मा और स्वामी ब्रह्मलीन की कवितायें एवं गीत आदि हुए। भक्तिभाव से गाये सभी गीत, कविताओं व भजनों को श्रद्धालुओं ने पसन्द किया।

मुख्य प्रवचन यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य विद्यादेव जी का हुआ। उन्होंने कहा कि

जब–जब सर्वशक्तिमान परमात्मा की कृपा होती है तब–तब ऐसे यज्ञादि शुभ कार्य करने का अवसर प्राप्त होता है। संसार की नश्वरता को ध्यान में रखते हुए आप लोगों को यहां जो कुछ सीखने को मिला है, उसे आपको बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिये। आचार्यजी ने श्मशान वैराग्य की चर्चा की और कहा कि यह शीघ्र ही समाप्त हो जाता है। आचार्य विद्यादेव ने महाभारत के एक प्रसंग की चर्चा कर यक्ष व युधिष्ठिर के प्रश्न व उत्तर को प्रस्तुत किया। **यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा था कि संसार का क्या हाल व समाचार है।** आचार्य जी ने कहा कि **यह संसार एक मोह रूपी कढ़ाहा है और उस कढ़ाहे में हम सब मनुष्य पकने के लिए पड़े हैं। इस कढ़ाहे को सूर्य की अग्नि तपा रही है। रात्रि व दिन ईधन हैं तथा ऊपर नीचे करने के लिए करछी के रूप में महीने व ऋतुएं हैं। इस कढ़ाहे में हम पक रहे हैं।** आचार्यजी ने कहा कि इस तरह का हमारा जीवन है। यह है हमारे संसार का समाचार जो युधिष्ठिर जी ने यक्ष को उसके प्रश्न के उत्तर के रूप में दिया था। उन्होंने आगे कहा कि जन्म व मृत्यु नियम हैं। **हमें इस संसार से जाना है। मेरा जीवन है ही क्या? कुछ भी नहीं। पता नहीं हम कब चले जायें।**

आचार्यजी ने कहा कि वेदों में शरीर व आत्मा के संवाद का वर्णन है। आत्मा शरीर अर्थात् देह से कहती है कि मुझे पता है कि तू जन्म व मृत्यु के स्वभाव वाला है। कहा नहीं जा सकता कि तू कब मुझ आत्मा का साथ छोड़ दे। एक उद्देश्य की पूर्ति के लिए मनुष्य को यह शरीर मिला है। वह उद्देश्य है मोक्ष की प्राप्ति करना। मेरा यह आत्मा बिना तुच्छ शरीर की सहायता के मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकता। तू मुझे मोक्ष तक पहुंचा सकता है। आत्मा की वेदना यह है कि यह शरीर पता नहीं कब मेरा साथ छोड़ देगा। मनुष्य का जीवन साधारण जीवन नही हीरा जीवन है। हमें जीवन का उद्देश्य इसी समय पूरा करना चाहिये। कल की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिये वरना समय हाथ से निकल जायेगा। भविष्य का कुछ भी निश्चित नहीं है। वेद मन्त्र हमें सावधान करता है। वेद कहता है कि जीवन के उद्देश्य मोक्ष की पूर्ति इसी जीवन में शीघ्रातिशीघ्र करने का प्रयास करो। जीवन मे आपने जो सीखा है, उसे बढ़ाओ। यदि खुद सीखोगे नही और सीखे हुए का प्रचार नहीं करोगे तो आपको कुछ लाभ न होगा। सीखना भी है और उसका प्रचार भी करना है। **यहां आपने जो साधना की है उसे आपको सफल बनाना है। जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति का मार्ग छुरे की तेज धार पर चलने के समान है। मोक्ष प्राप्ति के कार्य में हमारे कई जीवन लग सकते हैं इसलिए आप शिथिलता न बरतें। हम सबको अपने शरीर अर्थात् स्वास्थ्य पर ध्यान देना होगा। शरीर आत्मा का साधन है। इस शरीर रूपी साधन को ठीक रखना ही होगा नहीं तो लक्ष्य प्राप्त नहीं होगा। आप जीवन के उद्देश्य को भूल न जाना। ईश्वर की प्राप्ति की साधना में लगे रहिये। ऐसा करेंगे तो आप अपने जीवन के उद्देश्य वा लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकेंगे। संसार मे अनन्त जीवात्मायें हैं और इन सबका कई बार मोक्ष हुआ है।** इसलिये हमें प्रयास करना है।

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी ने अपने आशीर्वचनों में कहा कि इस चतुर्वेद पारायण यज्ञ में भाग लेने वाले सभी लोग साधुवाद के पात्र हैं। आपने साधकों के कष्टों को स्मरण करते हुए कहा कि आप यहां यज्ञ की प्रचण्ड अग्नि के सम्मुख बैठे रहे, प्रातःकाल लगभग 3 बजे ही उठ कर आपकी दिनचर्या आरम्भ हो जाती थी और आपने जमीन पर लेट कर यहां कठोर तप किया है। यह कार्य आपने आत्म कल्याण के लिए किया है। ऐसा ही आप अपने घरों में रहकर भी करना। **हम आत्मा हैं,**

शरीर नहीं। मेरी उपस्थिति में ही परमात्मा ने मां के गर्भ में मेरा शरीर बनाया। मां व अन्य हमारे सभी सम्बन्ध हमारे शरीर की अपेक्षा से हैं। शरीर के नष्ट होने पर हमारे सभी सम्बन्ध समाप्त हो जाते हैं। अगले जन्म में हमारे नये माता–पिता, भाई–बहिन आदि सम्बन्धी होंगे। हम जब मृत्यु होने पर संसार से जायेंगे तो कुछ साथ नहीं जायेगा। 'मैं' एक कूड़ा है। धन आत्मा की खुराक या भोजन नहीं है। अन्न व मान–सम्मान की भी आत्मा को आवश्यकता नहीं है। आत्मा की खुराक ईश्वर है। बुद्धिमान कला को सीख कर धन्य हो जाता है। न्यायपूर्वक कर्म करना, सत्याचरण करना, धर्माधर्म को जानकर धर्म का आचरण व अधर्म का त्याग करना, सत्य व असत्य को जानना, सत्य को धारण करना, कर्तव्य का पालन आदि ईश्वर की आज्ञायें हैं। ऐसा करने से मनुष्य जीवन सरल होता है। जो यहां रहकर सीखा है उसे जीवन में उतारना है। आसक्त नहीं होना, सबसे प्रेम करना तथा मधुर व्यवहार करना है। अविद्या को हटाना है। कोई मुझे बांध नहीं सकता। सबके अपने–अपने कर्तव्य हैं। सरल वा ऋजु मार्ग पर चलो। धर्म के पालन करने के लिए कष्ट सहन करने का नाम तप है। कर्म का फल कर्म के कर्ता को मिलता है। सब जीव वा मनुष्य स्वतन्त्र हैं। जो मनुष्य जैसा व्यवहार व कर्म करेगा, उसका वैसा फल मिलेगा। हम स्वयं को ठीक रक्खें। ईश्वर सबको शक्ति व प्रेरणा दें। आगामी किसी यज्ञ के अवसर पर हम फिर परस्पर मिलेंगे। स्वामी जी का जन्म दिल्ली के अन्तर्गत बदरपुर के निकट एक गांव में हुआ था। उस गांव में 28 मार्च से 3 अप्रैल, 2016 तक ऐसा ही वेदपारायण यज्ञ होगा, जैसा कि यहां हुआ है। (टिप्पणीः–स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी वर्तमान समय में सम्भवतः संसार में वृहत् यज्ञों को करने व कराने वाले सर्वाधिक यज्ञप्रेमी महापुरुष हैं। सर्वाधिक वेदपारायण यज्ञ करने व कराने का आपका विश्व रिकार्ड हमें प्रतीत होता है। आपने सम्प्रति एक सौ से अधिक वेदपारायण–चतुर्वेद पारायण यज्ञ करे व करायें हैं। यज्ञों की इस शृंखला में आपने एक वर्ष पूर्व हरियाणा राज्य के मंझावली में गुरुकुल, मंझावली की पवित्र भूमि पर लगातार 6 माह तक एक विशाल ''गायत्री पुनश्चरण एवं चतुर्वेद पारायण महायज्ञ'' कराया था। स्वामी जी का ग्राम धौलास, देहरादून में अपना भव्य आश्रम है जहां यज्ञीय गतिविधियां निरन्तर चलती रहती हैं। आपका पूरा परिवार याज्ञिक परिवार है। आपके पुत्र श्री श्रीकान्त वर्मा जी और उनका परिवार भी निष्ठावान् याज्ञिक परिवार हैं। आपके भव्य निवास में एक विशाल यज्ञशाला बनी है जहां दैनिक यज्ञ होता है। घर में ही गोपालन भी होता है। उनका जीवन प्रेरणाओं का पुंज है।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून द्वारा मई 2016 में पवमान पत्रिका विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है जिसके लिए विज्ञापनों की आवश्यकता है। आपसे विनम्र निवेदन है कि इस पुनीत कार्य में सहयोग देने की कृपा करें। विज्ञापन के रेट निम्नलिखित हैं।

1.	कलर्ड फुल पेज	रु. 5000
2.	ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज	रु. 2000
3.	ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज	रु. 1000

"ओउम्"

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन (मेरी दृष्टि में)

—नन्द किशोर अरोड़ा "साधक"

भारत भूमि सदा से ही ऋषियों, मुनियों योगियों की तपास्थली रही है। समस्त विश्व सदा से ही आध्यात्मिक क्षुधा पूर्ति के लिए भारतवर्ष पर निर्भर रहा है। वर्तमान में भी यज्ञ एवं योग के विश्वगुरु की उपाधि का श्रेय भारतभूमि को ही प्राप्त है। देश के सभी कोनो उत्तर, दक्षिण, पूर्व तथा पश्चिम चारों दिशाओं में जगह–जगह पर आध्यात्मिक केन्द्र यज्ञ, योग, एवं वेद ज्ञान के प्रचार में कार्यरत्त हैं।

प्रायः इन सभी केन्द्रों में योग की भिन्न–भिन्न पद्धतियों (जैसे राजयोग, सहजयोग, हठ योग, सरल योग, इत्यादि। द्वारा जो योग प्रशिक्षण दिया जा रहा है उनमें महर्षि पतंजलि जी के योगदर्शन में वर्णित वैदिक योग के पूर्णतया अनुपालन का अभाव पाया जाता है। इसके साथ ही वेद ज्ञान के प्रसार हेतु ऋषिकृत आर्षग्रन्थों को न अपना कर सरल रूप में लिखे गए सेचक कथा कहानियों को आश्रय लेकर ही इस कार्य का सम्पादन हो रहा है और आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती रचित सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका संस्कार विधि, पंचमहायज्ञ विधि आदि मूल ग्रन्थों के माध्यम से स्वाध्याय का प्रायः अभाव पाया जाता है जिस कारण यज्ञ और योग का सम्पादन ऋषि की बताई गई विधि के अनुसार नहीं हो पा रहा है।

पिछले कुछ वर्षों से मुझे उत्तराखंड प्रान्त की राजधानी देहरादून में, शिवालिक पर्वत श्रेणी की तलहटी में स्थित वैदिक साधन आश्रम, तपोवन में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ पर प्रातः सांय दोनों काल अग्निहोत्र का सम्पादन बहुत ही उत्तम प्रकार से होते हुए देखने को मिला। वर्तमान में दैनिक यज्ञ का संचालन आश्रम में लम्बे समय से निवास कर रही वानप्रस्थ आश्रम में दीक्षा प्राप्त वयोवृद्ध माता नरेन्द्र बब्बर जी के द्वारा बड़े ही सुचारु रूप से किया जा रहा है।।

यह आश्रम पिछले लगभग 65 वर्षों से सन्तों, महात्माओं की तपःस्थली रहा है। महात्मा आनन्द स्वामी जी, महात्मा प्रभुआश्रित जी, स्वामी योगेश्वरानन्द जी, महात्मा दयानन्द जी एवं अन्य कई योगियों ने इस साधना स्थली पर एकान्तवास करते हुए तपस्या का लाभ उठाकर अपने जीवन को सफल बनाया है।

इस आश्रम के स्थापना काल से ही यहाँ पर ग्रीष्म एवं शरद् ऋतु में उत्सवों का आयोजन होता आ रहा है जिसमें इस आश्रम के स्थाई संरक्षक डा० स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती के ब्रहमत्व में चतुर्वेद परायण यज्ञ एवं अन्य वैदिक यज्ञों का सम्पादन कराया जाता है और साथ ही उन्हीं के निर्देशन में ध्यान योग साधना का अभ्यास भी कराया जाता है। बीच–बीच में समय–समय पर स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी द्वारा भी ध्यान योग साधना शिविर चतुर्वेद परायण यज्ञ एवं गायत्री महायज्ञों का आयोजन होता रहता है। इन शिविरों में भारी संख्या में साधक–साधिकाएँ भाग लेकर लाभान्वित होते हैं। साथ ही इन उत्सवों में देश के भिन्न–भिन्न प्रान्तों से सुप्रसिद्ध भजनोपदेशकों को निमन्त्रित करके भजन सन्ध्या का भी सुन्दर आयोजन कराया जाता है। देश के भावी निर्माता युवा पीढ़ी को युवा सम्मेलनों के माध्यम से उनके भीतर देश प्रेम की भावना जागृत करवाने एवं वैदिक वाड.मय से परिचित करवाने का भी सुन्दर प्रयास इन उत्सवों के बीच करवाया जाता है।

वर्तमान में पिछले लगभग सात वर्षों से इस आश्रम में आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य द्वारा योग प्रशिक्षण हेतु वैदिक योग प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। यह शिविर वर्ष में दो–तीन बार आयोजित किए जाते हैं। इन शिविरों में पूर्णतयः महर्षि पतंजलि जी रचित पतंजलि योग दर्शन में वर्णित वैदिक योग को छोटे–छोटे प्रयोगों के साथ क्रियात्मक रूप से सिखाया जाता है। इन शिविरों का भिन्न–भिन्न स्तरों में आयोजन किया जाता है। प्रथम स्तर के शिविरों में नए अभ्यासियों को प्रवेश दिया जाता है और द्वितीय स्तर के शिविरों में केवल उन्हीं साधकों को प्रवेश की

अनुमति दी जाती है जो प्रथम स्तर के कम से कम दो शिविर इसी आश्रम में आचार्य आशीष जी द्वारा आयोजित शिविरों में कर चुके होते हैं। स्थानाभाव के कारण एक शिविर में केवल 70–80 शिविरार्थियों को ही प्रवेश दे पाना सम्भव हो पाता है। इन शिविरों में न केवल भारतवर्ष के दूर सदूर प्रान्तों से अपितु विदेशों से भी कई शिविरार्थी भाग लेकर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर चुके है। योग साधना के साथ शरीर को स्वस्थ बनाए रखने हेतु शारीरिक व्यायाम क्रियाएं भी करवाई जाती है। इन क्रियाओं का निरन्तर अपने स्थानों पर अभ्यास करते हुए सैंकड़ो शिविरार्थी स्वास्थय लाभ प्राप्त कर चुके है।

इसके अतिरिक्त आचार्य आशीष जी द्वारा समय–समय पर महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थों सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, पंच महायज्ञ विधि आदि के स्वाध्याय एवं वैदिक संध्या प्रशिक्षण शिविरों का भी आयोजन किया जाता है जिसमें सन्ध्या के मन्त्रों की सही उच्चारण विधि के साथ–साथ उनकी अर्थ भावना (महर्षि दयानन्द कृत पंचमहायज्ञ विधि के अनुसार) का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। इन शिविरों में भी भारी संख्या में भाग लेकर अनेकों शिविरार्थी लाभान्वित हो चुके हैं।

युवाओं में यज्ञ, योग एवं वेद ज्ञान के प्रतिरुचि उत्पन्न करने और उनके संपूर्ण व्यक्तित्व विकास हेतु आचार्य श्री द्वारा प्रतिवर्ष मई एवं जून माह में युवकों एवं युवतियों के लिए पृथक–पृथक "दिव्य जीवन निर्माण शिविरों" का आयोजन भी किया जाता है। इन शिविरों में युवाओं को Study Skills, पूर्ण व्यक्तित्व विकास (Total Personality Development), स्मरण शक्ति बढ़ाने हेतु मनोनियन्त्रण, सुखी जीवन के सूत्र, ध्यान (Meditation) तथा वैदिक मान्यताओं का प्रश्नोत्तर एवं वीडियों शो के साथ प्रशिक्षण दिया जाता है। इन शिविरों में भी हजारों युवक युवतियां भाग लेकर जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर हो चुके हैं।।

आश्रम के अधिकारियों के सर्वविध सहयोग से आचार्य आशीष जी का यह वैदिक योग प्रशिक्षण एवं युवाओं का निर्माण अविरल गति से चल रहा है जिससे शिक्षा लेकर अनेकों साधक साधिकाओं एवं युवाओं का Transformation (हृदय परिवर्तन हो चुका है।

आश्रम की अपनी एक गऊशाला भी है जिसमें लगभग दस गऊओं का सेवा कार्य एक कुशल गौपालक द्वारा सम्पादित हो रहा है और इनके अमृत तुल्य दुग्ध से आश्रमवासी एवं आश्रम के निकट क्षेत्र के निवासी भी लाभान्वित हो रहे हैं। साथ ही आश्रम वासियों एवं अतिथियों को सात्विक भोजन उपलब्ध कराने हेतु एक भोजन शाला भी है। इस भोजनशाला में कार्यरत बहिनें एवं अन्य कर्मचारी गण भी अपना कार्य पूरी लगन से करते हुए अतिथियों की आवभगत में जुटे रहते हैं।।

आश्रम द्वारा आर्य समाज के सन्यासियों, वानप्रस्थियों, प्रचारको, भजनोपदेशकों के लिये निःशुल्क चिकित्सा की व्यवस्था है तथा देहरादून के निवासियों के लिये भी अति कम मूल्य पर चिकित्सा सेवा प्रदान की जा रही है। वर्तमान में दंत चिकित्सा, होम्योपैथी, फिजियोथैरेपी तथा जनरल फिजिशियन की सेवायें उपलब्ध है तथा भविष्य में चिकित्सा सेवा को वृहद रूप देने के लिये चिकित्सालय भवन का निर्माण कराया जा रहा है। योग शिविरों की अत्यधिक उपयोगिता के कारण अनेक साधक, शिविरों में भाग लेने के इच्छुक रहते हैं लेकिन स्थानाभाव के कारण सभी साधकों को सम्मिलित करना सम्भव नहीं हो पा रहा था इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये आश्रम के अध्यक्ष श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी तथा आचार्य आशीष जी के प्रयासों से महात्मा प्रभु आश्रित सत्संग भवन का निर्माण कराया गया है जिसमें एक साथ 250 साधक सुविधापूर्वक बैठ सकते है। अब भविष्य में बड़े योग शिविर आयोजित करना सम्भव हो सकेगा। इस पवित्र कार्य हेतु दान देने वाले सभी दानदाताओं का हम हृदय से धन्यवाद करते हैं।

आश्रम की गतिविधियों का कुशलता पूर्वक सम्पादन कर रहें सभी सन्यासी वृन्द आचार्य श्री, अधिकारीगण एवं अन्य सभी कार्यो में सहयोगी कर्मचारी गण साधुवाद के पात्र हैं। ईश्वर इन सब की कार्यकुशलता को बनाए रखें और सभी स्वस्थ शरीर के साथ दीर्घायु आयु को प्राप्त होकर अपना सेवा कार्य निरन्तर करते रहें जिससे कि यह मानव कल्याण एवं निर्माण कार्य निरन्तर चलता रहे। यही सर्वशक्तिमान, सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर से हमारी प्रार्थना है कि आप आश्रम के सहयोगी बनें और परिवारजनों के साथ आश्रम में पधारें और धर्मलाभ उठायें।

ओ३म्

हरिद्वार अर्धकुम्भ में आर्यसमाज की भव्य व विशाल शोभायात्रा

गंगा में स्नान से किसी श्रद्धालु के पाप नहीं कटतेः स्वामी आर्यवेश

–मनमोहन कुमार आर्य

हरिद्वार के अर्धकुम्भ व आर्यसमाज के स्थापना दिवस के अवसर पर आज दिनांक 10 अप्रैल 2016 को यहां शंकराचार्य चौक, हरिद्वार से प्रारम्भ होने वाली आर्यसमाज की भव्य व विशाल शोभायात्रा एवं नगर कीर्तन में भाग लेने का अवसर मिला। इस समय शोभायात्रा गंगा के तट व एक पुल पर है जहां एक कार के ऊपर बैठे हुए श्री सत्यव्रत सामवेदी जी महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज विषयक कुछ तथ्यों को सामने खड़ी आर्यजनता को बता रहे हैं। इनसे पूर्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के यशस्वी मंत्री श्री विट्ठलराव जी ने आर्यों को सम्बोधित किया। हमनें आर्य भाईयों से उनके सम्बोधन के बारे में पूछा तो सभी ने उनके सम्बोधन को तथ्यपूर्ण एवं अति प्रभावशाली बताया। सामवेदी जी के बाद सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का सम्बोधन वहीं सड़क पर शोभायात्रा को रोककर हुआ। स्वामीजी ने कहा कि **गंगा में स्नान करने से गंगा के श्रद्धालुओं के पाप कटने वाले नहीं है। बुराईयों को छोड़े बिना कोई मनुष्य पाप से मुक्त नहीं हो सकता है।** उन्होंने कहा कि यहां आये हुए भाई बहिनों में देहरादून से भी बड़ी संख्या में लोग आयें हैं जिनमें गुरुकुल पौंधा के ब्रह्मचारी और द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल की छात्रायें व उनकी विदुषी आचार्या डा. अन्नपूर्णा जी भी हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड के प्रधान माननीय श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी वागेश्वर से अपने साथियों के साथ आयें हैं जिनमें कुमाऊं व निकटवर्ती पर्वतीय स्थानों के अनेक भाई व बहिनें भी हैं। आज की शोभायात्रा में 15 प्रदेशों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अनेक सभासद व सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि व गणमान्य व्यक्ति भी इस भव्य शोभायात्रा के साक्षी बने हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि हमारे सामने के चण्डी मन्दिर में स्वामी दयानन्द जी ने तप किया था। वर्ष 1867 में हरिद्वार में स्वामी दयानन्द जी ने पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराकर दुनियां के पाखण्डों व अन्य मत–मतान्तरों को चुनौती दी थी। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी व उनके कार्यों से प्रेरणा लेकर ही हम यहां अर्धकुम्भ के अवसर पर वेद प्रचार का शिविर चला रहे। स्वामी आर्यवेश जी ने इस विशाल एवं व्ययसाध्य कार्य में आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड के प्रधान गोविन्द सिंह भण्डारी के सहयोग की सराहना की। स्वामीजी का व्याख्यान पूरा होने पर उन्होंने लोगों में जोश भरने के लिए अनेक नारे लगाये जिनमें से कुछ थे, **''कन्या भ्रूण हत्या मिटायेंगे, जातिवाद मिटायेंगे, आर्य राष्ट्र बनायेंगे, पाखण्डवाद मिटायेंगे, वैदिक धर्म फैलायेंगे, गोहत्या बन्द करो, बन्द करो और पाखण्डवाद मिटाने को ऋषि दयानन्द आये थे।''** इन जयघोषों व नारों को लोगों ने इतने उत्साह से लगाया कि हम भी अपने आप को रोक न सके और हमने भी अपनी पूरी शक्ति से इन नारों में भाग लिया। शोभा यात्रा अनेक मार्गों से होती हुए व ऋषि का जयघोष करती हुई शिविर में पहुंची जहां स्वामी आर्यवेश जी ने अपने संक्षिप्त विचार रखे। आर्यजनता को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हम व हमारे अनेक साथी यहां विपरीत परिस्थितियों में विगत लगभग 1 माह से तप कर रहे हैं। भीषण गर्मी, आंधी व अनेक विपरीत स्थितियों को यहां हमारे साथियों ने सहन किया है। स्वामीजी ने कहा कि यह हमारे शिविर का स्थान ऐसा हैं जहां महर्षि दयानन्द के जीवन

की घटनाओं, आत्मा व परमात्मा का चिन्तन करने पर ध्यान लगता है। यहां विगत दिनों चारों वेदों के सभी मन्त्रों से यज्ञ सम्पन्न हुंआ है। स्वामी जी ने कहा कि यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी चन्द्रवेश जी ने यहां की भूमि व वातावरण को वेदों की ऋचाओं से गुंजा दिया है। स्वामी आर्यवेश जी ने जयघोष लगाया तो भावविभोर लोगों ने वैदिक धर्म की जय की ध्वनि अपनी पूरी शक्ति से की जिससे सभा मण्डप का वातावरण ऋषि भक्ति के रंग में रंग गया। स्वामी जी ने आर्यसमाज सागर मध्यप्रदेश का परिचय देते हुए बताया कि सागर ऐतिहासिक नगर है और वहां एक शानदार आर्यसमाज है। वहां से 6–7 लोग हरिद्वार में सार्वदेशिक सभा की बैठक व शोभा यात्रा में भाग लेने पधारे हैं। उन्होंने अर्धकुम्भ–मेले पर की गई व्यवस्था में सहयोग के रूप में ग्यारह हजार रूपयों की धनराशि स्वामी आर्यवेश जी को प्रदान की। अन्य कुछ लोगों ने भी अपनी–अपनी ओर से सहयोग राशियां प्रदान की जिनका परिचय स्वामी आर्यवेश जी ने श्रद्धालुओं को कराया।

आर्य विद्वान पं. सत्यव्रत सामवेदी ने शोभायात्रा के मध्य एक वाहन की छत पर बैठकर अपने प्रवचन में योगेश्वर श्री कृष्ण की चर्चा करते हुए कहा कि वह गोपाल थे। गोपाल गाय का पालन करने वाले को कहते है। अतः योगेश्वर श्री कृष्ण जी गोपालन करते थे। हमें उनसे प्रेरणा लेकर गोपालन करना चाहिये। श्री सामवेदी जी ने कहा कि ईश्वर यज्ञमय है, इसलिए हमें व आप को भी यज्ञमय बनना है। उन्होंने कहा कि यदि हम सब यज्ञ करेंगे तो देश में सूखा नही पड़ेगा, भुखमरी नहीं होगी व किसान आत्म हत्या नहीं करेंगे। **गोरक्षा से किसान समृद्ध होगा।** अनेक राज्यों में शराब बन्दी की भी उन्होंने चर्चा की और सारे देश में शराबबन्दी किए जाने की मांग की। श्री सामवेदी जी ने श्री गुरुचरण छागला जी की चर्चा कर बताया कि उन्होंने शराब बन्दी के लिए आमरण अनशन किया और अपने प्राण दिये। आपने कहा कि आज देश में बहुत सारे समुदाय हैं परन्तु यहां आर्यसमाज का एक ओ३म् का ही झण्डा चहुंओर फहरा रहा है जो पाखण्ड खण्डन व ऋशि की दिग्विजय का सूचक है। उन्होंने कहा कि **जब तक आर्यसमाज जीवित है, हमारे देश का भविष्य उज्जवल है। अपने विचारों को विराम देने से पूर्व उन्होंने कहा कि हमारा सफर तब तक चलेगा जब तक कि हम पूरे विश्व को आर्य नहीं बना लेंगे।**

देश विदेश में आर्यसमाज के प्रचारक आर्य विद्वान श्री धर्मपाल शास्त्री जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि जिस प्रकार के विचारों व ज्ञान की आवश्यकता आज देश व समाज को है, उस प्रकार के विचारों को आप यहां हरिद्वार के अर्धकुम्भ के शिविर के अवसर पर प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम महर्षि दयानन्द जी के अनुयायी है। आप इतिहास पर दृष्टि डालिये। विश्व में अनेक महापुरुष हुए हैं। उन्होंने अनेक अच्छे कार्य किए हैं। यदि उन सभी महापुरुषों की तुलना स्वामी दयानन्द जी से करेंगे तो पायेंगे की ऋषि दयानन्द जी का स्थान बहुत ऊंचा है। उनके विचार सभी विषयों पर बहुत ऊंचे हैं और साथ ही मानव जाति के लिए कल्याणकारक भी हैं। ऋषि दयानन्द के विचारों का अध्ययन करने पर यह तथ्य भी सामने आता है कि उनके विचार विज्ञान पर आधारित हैं। उनके विचारों में विज्ञान विरोधी कुछ भी नहीं है। उन्होंने कहा कि विश्व के विद्वानों ने महर्षि दयानन्द के वेद विषयक विचारों पर अपनी सम्मति दी है जो कि अतीव महत्वपूर्ण व प्रशंसा से युक्त है। आचार्य धर्मपाल शास्त्री ने योगी अरविन्द के विचारों को प्रस्तुत किया। **अरविन्द जी ने कहा है कि ऋषि दयानन्द को वेदों के समझने की कुंजी प्राप्त थी। वेद के परिप्रेक्ष्य में महर्षि दयानन्द को उन्होंने पर्वतों की सबसे ऊंची चोटी की उपमा देकर गौरवान्वित किया है।** श्री धर्मपाल शास्त्री ने कहा कि बुद्ध, महावीर, ईसा, मुहम्मद, राम व कृष्ण के भक्तों ने अपने इन गुरुओं की मट्टी पलीद की। ऋषि दयानन्द ने इन महापुरुषों को कीचड़ से निकाला और यह सब पतित पावन बने। **श्री धर्मपाल शास्त्री जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द तो सर्वत्र पावन ही पावन थे। महर्षि दयानन्द एक ऐसे अनोखे ऋषि थे जिन्होंने अपनी पूजा नहीं चलाई**

और देश की भलाई के लिए अपनी राख को भी किसी किसान के खेत में खाद के रूप में उपयोग करने की बात कही थी। श्री धर्मपाल शास्त्री ने कहा कि आज लोग हमारा स्वागत, सम्मान व सत्कार करते हैं परन्तु हमारे ऋषि का स्वागत व सम्मान तो लोग पत्थर, धूल, तलवार व विष देकर करते थे। विद्वान वक्ता ने कहा कि हम जो अच्छे विचार व उपदेश सुनें उनका मनन करें व उसे अपने जीवन में आत्मसात करें। **उन्होंने कहा कि संसार की सभी समस्यायें मत, पन्थ व सम्प्रदायों की देन हैं।** शराब और गोहत्या की चर्चा कर इन शराब व गोमांसाहार के व्यस्नों को उन्होंने हानिकारक व निन्दनीय बताया। महर्षि दयानन्द जी द्वारा बनाये गये आर्यसमाज के शारीरिक, सामाजिक व आत्मिक उन्नति के नियम व इससे होने वाले लाभों की चर्चा भी उन्होंने की और अपने वक्तव्य को विराम देते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द ने वेदप्रचार करने के लिए आर्यसमाज रूपी वृक्ष लगाया था। श्री धर्मपाल आर्य जी का व्याख्यान आरम्भ होने से पूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध प्रदेश की ओर से शाल ओढ़ाकर उनका सम्मान भी किया गया।

द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल देहरादून की विदुशी आचार्या डा. अन्नपूर्णा ने अपने व्याख्यान का आरम्भ **ओ३म् ऋतं च सत्यं चाभीद्धात तपसोऽध्यजायत** मन्त्र से किया। उन्होंने कहा कि हम सब हरिद्वार में वेद प्रचार के लिए उपस्थित हुए हैं। वेद प्रचार करके हमें अज्ञान व अन्धकार को दूर करना है। महर्षि दयानन्द की भी हमारे लिए वेद प्रचार करने की आज्ञा है। हमें लोगों के अज्ञान में डूबने के कारणों को जानकर उन्हें अज्ञान में न पड़ने के लिए प्रचार करना है। जो लोग अज्ञान में भटक रहे हैं उन्हें अज्ञान से बाहर निकालना है। विदुषी वक्ता ने कहा कि आर्यसमाज का उद्देश्य वेदों का प्रचार व प्रसार है। परमात्मा ने मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए वेदों का ज्ञान दिया है। वेदों ने मनुष्यों को सुखी व कल्याणप्रद जीवन जीने की कला सिखाई है। वेद संगच्छध्वं अर्थात् मिल कर चलने का सन्देश देते हैं। आर्यसमाज अच्छे लोगों का संगठन है। हम सब भारत माता के पुत्र व पुत्रियां हैं। उन्होंने कहा कि यदि आर्यसमाज का व्यापक प्रचार प्रसार हो तो लोग एक ईश्वर को मानने लगेंगे। वेद गो माता और अन्य सभी पशुओं की रक्षा का सन्देश देते हैं। उन्होंने कहा आजकल लोग संस्कारों से विहीन होने के कारण मातृशक्ति का सम्मान नहीं करते। महर्षि दयानन्द ने स्त्री को यज्ञ की ब्रह्मा बनने का सम्मान देकर गौरवान्वित किया है। विदुषी आचार्या डा. अन्नपूर्णा ने कहा कि यदि महर्षि दयानन्द न आते तो हम वेदों के मन्त्रों के अर्थ न जान पाते और न हि यज्ञ की ब्रह्मा बन पाते। **उन्होंने कहा कि आज नारियां यज्ञों की ब्रह्मा बन रही हैं जिसका श्रेय महर्षि दयानन्द जी को है।** उन्होंने उज्जैन में आयोजित कुम्भ मेले की चर्चा की और बताया कि वहां होने वाले सभी वृहत् यज्ञों की ब्रह्मा स्त्रियों को ही बनाया गया है जिसमें से वह भी एक हैं। उन्होंने संगठन को सुदृढ़ करने और वेद प्रचार को बढ़ाने का आह्वान किया। डा. अन्नपूर्णा जी ने भारत को विश्वगुरु और देश को आर्य राष्ट्र बनाने का आह्वान किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा, छत्तीसगढ़ के प्रधान श्री कमलनारायण जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि महर्षि दयानन्द सर्वोत्तम जीवन जीने की शैली वा विद्या Art of Living के प्रणेता थे। महर्षि के इन विचारों से विश्व में क्रान्ति हुई। विद्वान वक्ता ने आधुनिक जीवन पद्धति की चर्चा की और इसे ग्लोबल वार्मिंग जैसी पर्यावरण की समस्या का कारण बताया। लातूर और मराठवाड़ा में सूखे की स्थिति व वहां जल के अभाव का उल्लेख कर उन्होंने इसे प्रकृति का असन्तुलन बताया। उन्होंने आज के लोगों को विशेषण दिया **'सम्पन्न जीवन विपन्न विचार'** और कहा कि आज के समाज व विश्व में विचारों की विपन्नता होने के कारण नाना समस्यायें पैदा हो रही है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द ने वेद भाष्य और अपने अन्य ग्रन्थों में विचार प्रस्तुत किये हैं जिनसे वर्तमान समय की अनेक समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। विद्वान वक्ता ने महर्षि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य 11/3 का उल्लेख कर कहा कि वायुमण्डल में सुगन्धित पदार्थों से यज्ञ करना चाहिये व वनस्पतियों के गुण–धर्म जानकर उनका शारीरिक चिकित्सा में उपयोग कर संसार को सुखी व समस्याओं से रहित बनाया जाना चाहिये। मर्यादा पुरुषोत्तम राम और भरत जी के संवाद की चर्चा कर उन्होंने बताया कि रामचन्द्र जी ने भरत जी से

पूछा था कि तुमने यज्ञ कराने वाले विद्वान पुरुषों की नियुक्ति की या नहीं? वायु प्रदूषण की चर्चा कर श्री कमल नारायण जी ने कहा कि सरकारी स्तर पर यज्ञ होने से पर्यावरण विषयक शुभ परिणाम मिल सकते हैं अत यज्ञ किया जाना चाहिये। लोगों को उस राजनीतिक दल को वोट देकर सरकार बनानी चाहिये जिसने अपने घोषणा पत्र में देश भर में सरकारी व्यय से यज्ञ करने का वचन दिया हो। उन्होंने कहा कि यदि धनायन वाले वायु कणों की उपस्थिति में श्वांस लेंगे तो तनाव व अनिद्राग्रस्त होकर रोगग्रस्त हो सकते हैं। इसके विपरीत ऋणायन वाली वायु के कणों में श्वांस लेने से मनुष्य को सुख, चैन, शान्ति का लाभ होता है व मनुष्यों की सारी बिमारियां दूर होती हैं। विद्वान वक्ता ने अग्निहोत्र यज्ञ का वैज्ञानिक विश्लेषण भी किया और कहा कि महर्षि दयानन्द के यज्ञ विषयक विचारों पर वैज्ञानिक अनुसंधान किया जाना चाहिये और उसके आधार पर मनुष्यों का जीवन सुखी बनाने के लिए उनका व्यवहार व उपयोग किया जाना चाहिये। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए विद्वान वक्ता ने कहा कि हमें यज्ञ व संस्कारों के माध्यम से वेदों की विचारधारा को आगे बढ़ाना चाहिये। व्याख्यान से पूर्व स्वामी आर्यवेश जी ने श्री कमलनारायण, प्रधान छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा का परिचय देते हुए बताया गया कि उन्होंने पर्यावरण विज्ञान पर पीएचडी की है। उनका शोध प्रबन्ध प्रकाशित भी हो चुका है। आपने अर्धकुम्भ मेले की व्यवस्था के लिए सार्वदेशिक सभा को ग्यारह हजार रूपयों की धनराशि भी भेंट की।

इस अवसर पर देहरादून के पं. उम्मेदसिंह विशारद ने **'देश धर्म व जाति की जिसने बचाई लाज है, वह आर्यसमाज है जी आर्यसमाज है'** गीत प्रस्तुत किया। श्री किशनलाल जी आर्य, भोपाल, मध्य प्रदेश ने भी **'वेद विरुद्ध जितने मजहब थे खोल दी है उनकी सबकी पोल, स्वामी जी ने चलाया है 14 गोली का पिस्तौल'** गीत गाकर लोगों में जोश व उत्साह उत्पन्न किया। स्वामी आर्यवेश जी ने श्री किशनलाल जी की प्रशंसा करते हुए उनके अनेक गुणों पर प्रकाश डाला। महाशय राजपाल जी भजनोपदेशक ने **'धक्के खाते रहे हैं दुनियां के लोगों मिल करके बोलो ओ३म् ओ३म् ओ३म् प्यारा ओ३म् ओ३म् ओ३म्'** एवं **'यदि नहीं टंकारे आती फाल्गुन की शिवरात हमारी कौन पूछता बात'** भजनों को प्रस्तुत किया। आर्यजगत के एक अन्य भजनोपदेशक श्री रुहेल सिंह जी ने भी अनेक प्रभावशाली भजन प्रस्तुत किए।

यह उल्लेखनीय है कि सार्वदेशिक सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड के तत्वावधान में अर्धकुम्भ हरिद्वार के मेले में 20 मार्च से निरन्तर प्रचार चलता रहा है। 13 अप्रैल, 2016 को मेला समाप्त हो रहा है। इस अवधि में आर्यसमाज के अनेक लोगों ने यहां की विपरीत परिस्थितियों में सभा के शिविर में रहकर घोर तप किया है जिनमें से एक श्री दिक्षेन्द्र आर्य भी हैं। आप जिस उत्साह वह श्रद्धाभक्ति से कार्य करते हैं, वह अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है। उनके कार्य व सेवा भावना को देख व अनुभव कर हममें उनके प्रति गहरी श्रद्धा उत्पन्न हुई है। इससे यह भी सन्देश मिला कि आर्यसमाज के लोगों को राग–द्वेष छोड़कर परस्पर मिलकर व एक दूसरे को परख कर ही किसी के प्रति अपनी कोई निजी राय बनानी चाहिये। ऐसा करके हम संगठन को मजबूत करने के साथ आर्यसमाज के प्रचार को भी बढ़ा सकते हैं। हम यह भी अनुभव करते हैं कि हम दूसरों के अवगुणों की चर्चा करने के स्थान पर अपने अवगुणों पर ध्यान दे और उन्हें दूर करने का प्रयास करें तो यह आर्यसमाज के हित में होगा। यह बात अवश्य है कि असत्य का खण्डन और सत्य का मण्डन आवश्यक है परन्तु असत्य के खण्डन में हमारा अपना असत्य भी सम्मिलित है। सार्वदेशिक सभा इस बात के लिए आर्यसमाज व आर्यजगत के सभी ऋषिभक्तों की ओर से धन्यवाद की पात्र है कि उसने महर्षि दयानन्द द्वारा सन् 1867 को स्थापित कुम्भ मेले में प्रचार की इस परम्परा का पूरी श्रद्धा व निष्ठा से पालन किया। इस शिविर व इसके कार्यकलापों में सहयोग करने वाले व इससे किसी भी रूप में जुडें बन्धुओं सहित सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, श्री गोविन्दसिंह भण्डारी एवं श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी आदि सभी महानुभावों के प्रति भी हम अपनी कृतज्ञता व धन्यवाद करते है जिन्होंने अपने जीवन का समय, श्रम व धन आदि इस कार्य में लगाकर इसे सफल बनाया है।

मधुमेह में असरकारी फूल-पत्तियां

डॉ० अजीत मेहता

मधुमेह में अमरूद का पत्ता

"बहुत कम लोग जानते है कि मधुमेह को नियन्त्रित करने का बहुत प्रभावशाली और आसान इलाज यह भी है कि मधुमेह के रोगी को अमरूद के पेड़ का एक अच्छा पता (जो कि अच्छी तरह विकसित हो) लेकर रात्रि एक गिलास पानी में भिगोकर रखना चाहिए और फिर प्रायः उस पानी को सर्वप्रथम पीना चाहिए। लगातार इस प्रकार लेते रहने से एक महीने में आपको अनुकूल परिणाम नजर आएगा और किसी अन्य दवा लेने की भी आवश्यकता न रहेगी।

अनुभव– श्री एन. सिन्हा, नई दिल्ली ने अपना यह अनुभव लोक हितार्थ मधुमेह का एक स्वानुभूत इलाज के रूप में 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में सम्पादक के नाम पत्र के जरिए प्रकाशित करवाया है।

इस सम्बन्ध में एक जगह मुझे भी यह पढ़ने को मिला है–

"करीब आधा पाव अमरूद के पत्ते भली भांति कूटकर जल में फूलने दें। दूसरे दिन सुबह छानकर पान करने से बहुमूत्र (डायबिटीज) रोग की बढ़ी अवस्था में विशेष लाभ होता है।" परीक्षा करने योग्य है।

मधुमेह की परीक्षित औषधि–'जवा फूल'

उड़हल (जवा, जशवंती, जाशौन) के फूल की कलिका मधुमेह का रोगी सवेरे खाली पेट यानि मुंह धोकर दस कलिका चबाकर खा जाये। ऐसा एक सप्ताह या रोग अधिक पुराना हो तो एक महीना खाये। यदि अधिक दिन भी खाये तो किसी तरह की खराबी नहीं होगी, लाभ ही होगा। पेशाब में शर्करा आना बिल्कुल बन्द हो जाएगा। औषधि सेवन से पहले पेशाब की जांच करा लें। पेशाब में चीनी चाहे जितनी क्यों न आती हो, इससे अवश्य लाभ होगा।

विशेष– (१) उपरोक्त प्रयोग कलकत्ता के ६-७-८० के 'विश्व मित्र' में छपा है।

(२) जवाफूल ७ कालीमिर्च २ के साथ प्रतिदिन प्रातःकाल सेवन करके भी मधुमेह में लाभ उठाया जा सकता है।

मधुमेह की अचूक दवा पलाश के फूल

किसी मिट्टी के बर्तन में एक गिलास जल कुएं का भरकर इसमें पांच नग पलाश के फूल डाल दें जो कि आसानी से सब जगह उपलब्ध होते हैं। सुबह फूलों को मसलकर बासी मुंह इस पानी को पियें। प्रति सप्ताह एक फूल बढ़ाते रहे। चार सप्ताह में रोग गायब हो जायेगा।

अनुभव– श्री गिरधारी लाल गाड़िया, झन्झुनू द्वारा प्रचारित और डा. पन्नालाल गर्ग, (अध्यक्ष, पलाश प्रयोगशाला, पीरपुर हाउस, लखनऊ) द्वारा अनुभूत।

विशेष– (१) इस पेड़ को ढ़ाक भी कहते हैं तथा अंग्रेजी में इसका नाम Butea Monosperma है। यह Indian Flame of forest के नाम से प्रसिद्ध है।

(२) पलाश के फूल अनुराधा नक्षत्र के समय तोड़कर प्रयोग से ओर भी शीघ्र लाभ होता है।

मधुमेह में सदाबहार पौधे के पत्ते और फूल

सदाबहार (विंका रोजिया) के चार पत्ते (फूल की पंखुड़िया नहीं) स्वच्छ पानी से साफ कर प्रातः खाली पेट दिन में एक बार प्रातः चबाने

और ऊपर से दो घूंट पानी पीते रहने से कुछ ही दिनों में मधुमेह में स्थायी लाभ हो सकता है। बच्चों को सदाबहार के पत्ते एक औंस पानी में रगड़कर दिए जा सकते हैं। आधुनिक परीक्षणों से इस बात की पुष्टि हो चुकी है कि इसके पत्ते खून और मूत्र की चीनी दूर करने में अत्यन्त प्रभावशाली हैं।

विशेष– (१) सदाबहार के चार फूल सुबह पानी में उबालकर बिना चीनी की चाय बना लें। एक चिकित्सक का अनुभव है कि इससे सात दिन में मूत्र की शक्कर बंद हो जाती है। खून की शक्कर कभी बंद होती है, कभी नहीं। मधुमेह के अतिरिक्त ल्यूकमिया (Blood Cancer) में भी सदाबहार के ६-६ फूल सुबह–शाम खाने से बड़ा लाभ होता है। परन्तु लेखक के अनुभव में सदाबहार के पत्ते ही ज्यादा प्रभावशाली है।

एक अन्य अनुभव– एक महात्मा का अनुभव इस प्रकार है–

सदाबहार के पौधे (सफेद फूल वाले) की १०-१२ ताजा पत्तियों को पीसकर एक गोली बनायें और पानी के साथ निगल लें। रोजाना प्रातः इसका सेवन करें। इसके आधा घंटे बाद ही कुछ खाएं–पिएं। मधुमेह या ब्लड शुगर के रोगी को कुछ दिनों बाद लाभ दिखायी देने लगेगा।

(२) हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, वनस्पति शास्त्र विभागाध्यक्ष, श्री टी. एम. वर्गीज ने सदाबहार को खून और पेशाब की चीनी को काबू करने में काफी असरदार पाया। उन्होंने इसके द्वारा ५० से अधिक डायबीटिज के पुराने रोगियों को ठीक करने का दावा किया है।

मधुमेह का इलाज तीन दिन में जामुन के पत्तों से

"मेरे एक सम्बन्धी की स्त्री को चार वर्ष से मधुमेह की शिकायत थी। मैंने कई–पुरानी दवाइयां सेवन करवा दीं परन्तु किसी से भी कोई लाभ न हुआ। यदि किसी दवाई से कुछ लाभ हुआ भी तो उसका प्रभाव स्थायी नहीं हुआ। इसी बीच एक मित्र ने रोग का जो इलाज बताया उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र है। उन्होंने मुझे जामुन का फल और इसके पत्ते इस्तेमाल कराने का परामर्श किया, इससे उन्होंने दो–तीन रोगियों को स्वस्थ होते देखा था।

मैंने रोगिणी को जामुन की चार पत्ती प्रातः तथा सायं खिलाना शुरू किया। तीसरे दिन मूत्र का परीक्षण हुआ तो यह देखकर अचम्भा हुआ कि जो चार प्रतिशत शुगर आया करती थी वह बिल्कुल गायब हो गई।"

अनुभव– डाक्टर लाजपत राय वर्मा मेडिकल टाइम्स का उपरोक्त पत्र दिल्ली में श्री रमेशचन्द्र द्वारा सम्पादित युग पत्रिका के स्पेशल एडीशन चौथे अंक में छपा था, साभार उद्घृत किया गया है।

अन्य विधि– जामुन के हरे कोमल चार पत्ते बारीक पीस कर ६० ग्राम जल में मिलाकर छानकर खाली पेट दिन में दो बार आवश्यकतानुसार दो सप्ताह तक पिएं। इसके पश्चात् इसे हर दो महीने बाद दस दिन लेते रहें तो मूत्र में शर्करा जाना बन्द हो जाएगा।

मधुमेह में प्रभावशाली नीम की पत्तियां

"नीम की आठ हरी कोमल पत्तियों को रोजाना प्रातः खाली पेट नाश्ते से पहले दांतों से चबाना और रस निगलते जाना मधुमेह नियन्त्रण का प्रभावशाली इलाज है।

मुझे स्वयं ६८ साल की अवस्था में जुलाई १६६० को डायबीटिज का पता चला और मैं होली फेमिली हॉस्पिटल, ओखला दिल्ली, में रेस्टिनोने (Rastinon) की ३–४ टिकियां रोजाना की भारी खुराक पर रखा गया और धीरे–धीरे १/२ गोली पर तीन साल में आ गया। भारी परहेज यथा चावल, दलिया, चीनी, पुडिंग, केला, आइसक्रीम, आम, अंगूर आदि नहीं खाता था।

अप्रैल १९६३ में कैंसर का सन्देह होने पर, पेट का बड़ा ऑपरेशन हुआ पर कुछ भी न मिला। मैंने २५ पौंड वजन खो दिया यद्यपि डॉक्टरो के कहने से रोजाना चिकन और तमाम प्रकार के टॉनिक लेने के बावजूद भी नौ मास में एक औंस वजन नहीं बढ़ा। कमजोरी की दशा में दिसम्बर १९६३ में भयंकर सर्दी से अकड़कर निमोनिया हो गया। कुछ ठीक होने पर मेरे डाक्टर ने सलाह दी–'आप किसी गर्म जलवायु वाले स्थान पर चले जायें।' मैं बम्बई चला गया। बम्बई में मेरी ७० साल की बहन का ५० वर्षीय लड़का अर्थात् मेरा भानजा, जो १० बच्चों का पिता था, डायबीटिज में नीम के पत्तों के इलाज से लाभान्वित था। उसने धीरे–धीरे सब परहेज छोड़ दिया और शारीरिक खस्ता हालत से गुलाबी बदन हो गया।

मैंने १० दिन तक नीम की पत्तियां लेने के बाद रेस्टिनोन की टिकिया लेना छोड़ दिया। ब्लड शुगर की जांच करवाई। चीनी, आलू, चावल का परहेज रखता था। रक्त की चीनी पहले से बहुत कम आई। इलाज चालू रखा और एक मास बाद मैंने थोड़ा चीनी, चावल, आइसक्रीम, पुडिंग आदि लेना शुरू कर दिया और धीरे–धीरे अब मैंने भी भानजे की तरह डायटिंग छोड़ दी। मैंने फिर अक्टूबर १९६४ में फिर अपना ब्लड शुगर चेक करवाई तो डाक्टरों ने मुझसे कहा कि अब आपको बार–बार जांच के लिए आने की जरूरत नहीं है, आप हर तरह से सामान्य है। अब मैं दिन में एक दो बार चाय लेता हूँ तथा सब प्रकार की मिठाइयां खाता हूँ। मुझे कभी फिर डायबीटिज नहीं हुई।

मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि नीम की पत्तियां डायबीटिज को जड़ से भले ही दूर नहीं करती परन्तु प्रभावशाली रूप से नियन्त्रण करती है, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं। खाने पीने पर कोई रोक नहीं, अपनी शक्ति को कायम रखने के लिए पर्याप्त चीनी ले सकते हैं। एक बात और, मैंने पिछले दिसम्बर १९६५ में नीम की पत्तियां खानी भी आठ दिन के लिए छोड़ दीं और पेशाब प्रतिदिन जांच करता था और रिपोर्ट (All Clear) आती रही जिससे सिद्ध होता है नीम का प्रभाव खून में काफी दिन तक बना रहता है। अभी मैं बराबर पत्तियां लेता रहता हूँ और मेरा पेट घड़ी की सुई की भांति नियमित रूप से साफ होता रहता है। जब से मैंने डायट बदली है, १२५–१३० पौंड तक मेरा वजन बढ़ा है। मैंने इस इलाज की परीक्षा की है और सही पाया।

अन्त में उन्होंने लिखा है कि अधिकाशं लोगों को अनुकूल आने पर भी कभी–कभी अन्य एलर्जिक कारण या प्रकृति के कारण occassionally २–४ % को लाभ नहीं हुआ जैसे ३२ साल के एक व्यक्ति को इससे लाभ नहीं हुआ और उसे इन्सुलिन लेनी पड़ती है। अन्यथा यह नीम की पत्तियों का इलाज कारगर सिद्ध हुआ है।

विशेष– (१) सामान्यतया आठ पत्तियां पर्याप्त हैं। कुछ केसों में केवल दो बड़ी पत्तियां पर्याप्त होती हैं। बड़ी हरी नर्म पत्तियां २ से ८ और लाल कोंपले १०–१५ पत्तियां ली जा सकती हैं।

(२) पत्तियां लेने के तथा नाश्ता लेने में अधिक देर न करें। कई बार काफी देर से नाश्ता लेने से पाखाना में खून जाने की शिकायत मिली है।

(३) हर दस दिन बाद ब्लड–शुगर की जांच कराते रहे।

(४) पहले खान–पान का परहेज रखें और धीरे–धीरे खाने पीने की चीजों से छुटकारा पाएं।

मधुमेह में बेल के पत्ते

बेल की ग्यारह पत्तियां (एक में तीन होती हैं, जिसे डन्ठल सहित लें) लेकर एक औंस पानी के साथ बारीक पीस लें। तीन काली मिर्च भी साथ पीस लें और कपड़े से छानकर दिन में एक बार पी जायें। इस प्रकार लगातार ४१ दिन पीने से मधुमेह नष्ट हो जाता है। स्व. श्री बी. एम. दरबारी, इलाहाबाद ने यह अनुभूत नुस्खा लिखा है।

एक अन्य विधि– बेल की ग्यारह पत्तियां लेकर थोड़े पानी में बारीक पीस कपड़े से छानकर पियें। प्रतिदिन दो पत्तियां बढ़ाते जायें। जब पत्तियां ५१ हो जाएं तब फिर दो–दो पत्ते कम करते जायें। इस प्रकार बेल की पत्तियों के सेवन से भी मधुमेह से छुटकारा मिल जाता है। कब्ज की प्रकृति व प्यास की अधिकता वाले रोगी को बेलपत्र विशेष लाभकारी है।

(१) मधुमेह में बेलपत्र का स्वरस

एक कोयले के व्यापारी को मूत्र शर्करा सात प्रतिशत थी। इन्स्युलिन इंजेक्शन लेते रहने से सात से घटकर तीन प्रतिशत मूत्र शर्करा रह गई। इससे कम न हुई। यदि एक इंजेक्शन रोक दिया जाता तो मूत्र–शर्करा का परिमाण बढ़ने लगा। इन्हें बेलपत्र का स्वरस निकालकर १० से ४० ग्राम की मात्रा में दिया गया। एक सप्ताह के प्रयोग से ही शर्करा घटकर दो प्रतिशत पर आ गई।

(२) २१ दिन में ब्लड–शुगर २३० से घटकर शून्य हो गई

"खून में चीनी" के एक अन्य रोगी का अनुभव इस प्रकार हैः–

"मेरे रक्त में ब्लड शूगर २३० थी। प्रतिदिन ५ बेल के पत्ते, २१ श्यामा तुलसी के पत्ते, ७ नीम के पत्ते, ११ काली मिर्च –चारों को सिल पर घोट–पीसकर एक कटोरी जल के साथ लेने और प्रतिदिन प्रातः तीन किलो मीटर तक भ्रमण हेतु जाने का प्रयोग किया जिससे २१ दिन बाद ही रक्त–परीक्षण करने पर मेरी ब्लड शूगर निल हो गई। टहलने से मुझे यह लाभ हुआ है कि रक्त शर्करा २३० से घटकर शून्य हो गई और आहार में चावल और मिठाई का परहेज न करने पर भी रक्त शर्करा में कोई वृद्धि नहीं हो रही है।"

(३) मूत्र शर्करा व व्रण ठीक

श्री लक्ष्मण सखाराम चितले को मूत्र शर्करा थी। उनके पैर में एक फोड़ा उत्पन्न हो गया था। और सुप्रसिद्ध डाक्टर गोले का अन्तिम निर्णय पैर कटवा देने का था। उन्हें बेलपत्र के रस का (मात्रा १० से २५ ग्राम स्वरस) प्रयोग कराने पर कुछ दिनों में व्रण (फोड़ा) सूखने लगा और मूत्र शर्करा में भी आश्चर्यजनक कमी आ गई।

(४) बेल के ७ हरे पत्ते, ७ काली मिर्च तथा ७ बादामगिरी (पानी में भिगोई हुई) को बारीक पीसकर १०० ग्राम पानी में मिला कर दिन मे दो बार पीने से बहुत ही जल्दी रक्त में शर्करा की मात्रा घटते हुए देखा गया है।

(५) एक कांच के गिलास में ५ बेल के पत्ते ५ तुलसी के पत्ते, ५ नीम के पत्ते तथा ५ ग्राम विजयसार की लकड़ी को रात में पानी में भिगों दें। प्रातः छानकर इस पानी का नियमित प्रयोग करते रहें। खादी भंडार से प्राप्य 'विजयसार की लकड़ी के गिलास' में रात में पानी रखकर सुबह इस पानी को पीने से भी कई रोगियों को मधुमेह में लाभ होते देखा गया है।

मधुमेह में तुलसी की पत्तियां

हाल ही में हैदराबाद में खाद्य एवं पोषण विभाग द्वारा की गई शोध के अनुसार यदि तुलसी की पत्तियां नियमित रूप से सेवन की जाए तो रक्तशर्करा कम हो जाती है। यही नहीं इसके प्रयोग से उन दवाओं को भी कम या बन्द किया जा सकता है जो मधुमेह के रोगी को नियमित लेनी पड़ती है। यद्यपि तुलसी की पत्तियों की मात्रा और सेवन के तरीके के बारे में स्पष्ट निर्देश प्राप्य नहीं है फिर भी इतना जरूर है कि तुलसी की पत्तियों के सेवन से भी मधुमेह पर नियन्त्रण किया जा सकता है। यह तो सर्वविदित ही है कि तुलसी में सर्वरोगनाशक शक्ति विद्यमान है।

मधुमेह के सम्बन्ध में पथ्य–अपथ्य आदि की जानकारी के लिए कृपया '**स्वदेशी चिकित्सा सार**' देखें।

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

रायपुर रोड (नालापानी), देहरादून–248008, दूरभाष : 0135–2787001

युवाओं हेतु
दिव्य जीवन निर्माण शिविर (आवासीय)

युवति वर्ग– 30 मई सांयकाल से 3 जून 2016 प्रातः काल तक

युवक वर्ग– 9 जून सांयकाल से 13 जून 2016 प्रातः काल तक

आयु सीमा– 15 वर्ष से 32 वर्ष तक

स्थान– वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी देहरादून

शिविर निर्देशक–आचार्य आशीष जी तपोवन आश्रम तथा सहयोगी शिक्षक वर्ग

विषय– 1. Study Skills

2. पूर्ण व्यक्तित्व विकास, (Total personality development)
3. स्मरण शक्ति तीव्र करने के उपाय, मनोनियंन्त्रण,
4. सुखी जीवन के टिप्स, ध्यान (मेडीटेशन), आत्म सुरक्षा के उपाय (मार्शल आर्ट्स) एंव
5. वैदिक सार्वजनीन सत्यसिद्धान्तों का परिचय, प्रश्नोत्तर एवं वीडियों शो आदि।

भाषा–हिन्दी एवं अंग्रेजी

नियम–1. शिविर मे पूर्ण काल अनुशासित रहना अनिवार्य है।

2. प्रतिभागी की जिम्मेदारी माता पिता अथवा प्रेरक की होगी एवं उनकी लिखित स्वीकृति भी जमा करनी होगी।

शिविर शुल्क– इस ईश्वरीय कार्य में प्रत्येक प्रतिभागी एवं अभिभावक द्वारा भावना पूर्वक स्वैच्छिक सहयोग करना अनिवार्य है।

शिविर में स्थान सीमित होने के कारण अपना स्थान यथाशीघ्र निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क कर सुरक्षित करा लेवें।

1. श्री यश वर्मा जी, यमुनानगर मो. 09416446305 (समय प्रातः 8 से रात्रि 10 बजे तक)
2. श्रीमती शालिनी शाह जी देहरादून मो. 8979753228 (समय दोपहरः 12 से सांय 07 बजे तक)
3. आचार्य आशीष जी देहरादून मो. 09410506701 (समय रात्रिः 8 बजे से 9.15 बजे तक)

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री
अध्यक्ष–09710033799

ई. प्रेम प्रकाश शर्मा
सचिव–09412051586

संतोष रहेजा
उपाध्यक्षा–09910720157

वैदिक साधन आश्रम तपोवन को दान देने वाले दानदाताओं की सूची

क्र.स.	नाम	धनराशि
1.	श्री एस.एल. कथूरिया, नई दिल्ली	5100
2.	श्री विशु तमर, नई दिल्ली	2100
3.	श्री सुनील कोहली, नई दिल्ली	5000
4.	श्री धरम खुराना, जय अपार्टमैन्ट रोहिणी	5100
5.	गुप्त दान, जय अपार्टमैन्ट रोहिणी	3100
6.	श्रीमती सुमेधा, जी–229 नारायणा विहार	500
7.	श्रीमती कृष्णा देवी, जय अपार्टमैन्ट रोहिणी	200
8.	श्री कवातरा, जय अपार्टमैन्ट रोहिणी	500
9.	श्रीमती पुष्पा अरोड़ा, जय अपार्टमैन्ट	500
10.	श्री यशपाल चावला, जय अपार्टमैन्ट	3100
11.	श्रीमती हर्ष खुराना, जय अपार्टमैन्ट	1100
12.	श्रीमती सुषमा आर्या, दिल्ली	500
13.	श्री के.के. कपानिया, जनकपुरी	500
14.	श्री रमेश कुमार, जनकपुरी	500
15.	श्री ओम प्रकाश सलूजा, शिवनगर	100
16.	श्री सन्तोष कुमार, बी–1 543 जनकपुरी	200
17.	श्री के.सी. वर्मा, बी–1 592 जनकपुरी	101
18.	श्री सुदेश आनन्द, राजौरी गार्डन	5100
19.	श्री विनोद सन्दूजा, राजौरी गार्डन	2100
20.	श्रीमती गणेश देवी, राजौरी गार्डन	2100
21.	श्रीमती राज चौधरी, पश्चिमी विहार	5100
22.	श्रीमती पुष्पा खुराना, जनकपुरी	1100
23.	गुप्त दान, जनकपुरी	3100
24.	डा० एस.के. रहेजा, नारायणा विहार	1100
25.	आर्य समाज, बी–2, जनकपुरी	2100
26.	श्रीमती लीला देवी, जनकपुरी	5100
27.	श्रीमती कृष्णा खट्टर, जनकपुरी	1100
28.	श्री सुरेश कुमार टूटेजा, जनकपुरी	1100
29.	श्री सुरेश कपूर, फ्रैन्ड्स कॉलोनी, दिल्ली	5100
30.	श्रीमती निर्मला गुप्ता, जनकपुरी	500
31.	श्रीमती सरला गुप्ता, जनकपुरी	500
32.	श्रीमती कृष्णा अरोड़ा, जनकपुरी	500
33.	श्री एम.पी. शर्मा, तीसहजारी	1100
34.	श्रीमती जय देवी, पुसंगीपुर	500
35.	श्री वरुण आर्या, जनकपुरी	500
36.	श्री वाई.के. जुनेजा, तिलकनगर	500
37.	मुस्कान और दिशा भाटिया, केशवपुरम	1000
38.	श्रीमती पूजा वर्मा, शारदापुरी	500
39.	श्री विकास, फरीदाबाद	200
40.	श्री सुरेन्द्रनाथ, जनकपुरी	125
41.	श्रीमती निर्मला सेतिया, नई दिल्ली	11000
42.	श्री सतीश कामरा, नारायणा विहार	2100
43.	श्री एम.एल. गुलाटी, नारायणा विहार	2100
44.	आचार्य श्याम देव, नारायणा विहार	101
45.	श्री पी.डी. ओबराय, नारायणा विहार	250
46.	आर्ष साहित्य ऐकेडमी, दिल्ली	5100
47.	श्री रणवीर सिंह, जी–79 नारायणा विहार	250
48.	श्री श्याम सुन्दर लाल गुप्ता, नारायणा विहार	2100
49.	श्री रविन्द्र गर्ग, एफ–83 नारायणा विहार	1100
50.	आर्य समाज, नारायणा विहार	11000
51.	श्री पंकज ग्रोवर, पालम विहार, गुड़गांव	2100
52.	श्री ओम प्रकाश मदान, शालीमार बाग	251
53.	श्री गबरधन राजपाल, शिव नगर	500
54.	श्री रविन्दर बब्बर, जनकपुरी	1100
55.	श्रीमती शकुन्तला देवी, जनकपुरी	1100
56.	श्री टी.सी. सन्दूजा, नारायणा विहार	25000
57.	श्री धरम खुराना, जय अपार्टमैन्ट, सै.9	11000

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून सभी दानदाताओं का धन्यवाद करता है।

With Best Wishes From :

Sanjay Chauhan

9412007254, 9719066699

Uttaranchal Communication Services

Authorised Distributor for Kenwood Wireless Equipments

Wireless Equipments, Solar Systems, Cordless, EPABX, Telephone, Invertor, Batteries (Sale & Service)

OFFICE :
A-92 C, M.D.D.A. Colony, Chander Road, Dehradun
Telefax : 0135-2651680
E-mail : ucsdehradun@gmail.com

With Best Compliments from

Ideate. Create. Fascinate.

CRI Events

Uttarakhand Biggest & Leading Event Management Company

⋆ Events ⋆ Promotions ⋆ Road Shows ⋆ Conferences
⋆ Dealer Meets ⋆ Exhibitions ⋆ Theme Parties & Marriage Planners

For Details Contact : Naveen Khanna
F-2 Meedo Plaza, Ground Floor, Rajpur Raod, Dehradun
Ph. : 9897099955, 9412050819

Sanjay Orthopaedic, Spine & Maternity Centre

20/3 Doon Vihar, Jakhan, Dehradun, Uttarakhand, India, 248001
Email: bkssanjay@hotmail.com, Website: www.soscentre.in
Phone: - 94120 28822, 94120 51155, 0135-2733800

डॉ० सुजाता संजय
को
श्री हरीश रावत मुख्यमंत्री उत्तराखंड सरकार
द्वारा
''इन्दिरा गाँधी नेशनल आवार्ड''
से सम्मानित

Dr. B.K.S. Sanjay
MS (Ortho), DHHM, MAHA, MAMS, FIMSA, FASIF
Consultant Orthopaedic & Spine Surgeon
Guinness World Records Holder
Limca Book Record Holder

O.P.D. Timing
3 pm to 7 pm (Monday to Saturday)
SUNDAY CLOSED

Dr. Sujata Sanjay
M.B.B.S., D.G.O. F.I.C.M.C.H.
Consultant in Obstetrics and Gynecology
Indra Gandhi National Award Holder
Uttarakhand Gaurav 2015

O.P.D. Timing
Morning: 9 am to 1 pm
Evening: 5 pm to 6 pm Monday to Saturday

TREATMENTS & PROCEDURES

Orthopeadic
- कमर दर्द (सियाटिका) के ऑपरेशन (Back pain all kind's spine surgery)
- सुई द्वारा रीढ. की टी0बी0 एवं कैंसर की जॉच
- ट्यूमर, कैंसर में (हाथ व पैर बचाने के ऑपरेशन)
- टेढे. पैर, पोलियो, सी0पी0 (C.P. Polio)
- Total Joint Replacement THR &TKR (कूल्हे एवं घुटने बदलना)
- नये एवं पुराने फ्रैक्चर (New & Old fracture)
- गठिया, आर्थ्राइटिस (arthritis)
- अन्य सस्थि संबंधी शल्य चिकित्साएँ (All kinds of Ortho Surgery)
- हड्डी में कैल्शियम की जॉच (B.M.D.)

Gynaecology
- High risk pregnancy care (जोखिम भरी गर्भवस्था में देखभाल)
- Day care procedures (दैनिक देखभाल की प्रकियाऐं)
- Post Parturm Strelisation (महिला नसबन्दी)
- Cesarean Hysterectomy Abdominal & Vaginal Hysterectomy (पेट खोलकर एवं योनिद्वार द्वारा बच्चेदानी निकालने का ऑपरेशन)
- Gynecological check up (स्त्री रोग जाँच)
- Menstrual disorders (मासिक चक्र की अनिमितताऐं)
- Infertility counseling & Treatment (बांझपन परामर्श एवं उपचार)
- Normal Delivery (सामान्य डिलीवरी)
- Cesarean Section (सिजेरियन ऑपरेशन)
- M.T.P. एवं D&C
- Family Planning Advice (परिवार नियोजन की सलाह)
- Colposcopy (गर्भाशय के मुँह के कैंसर की जॉच)
- Uterus Cancer & Tumor Treatment
- I.U.I. (कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा)
- दूरबीन द्वारा पेट एवं बच्चेदानी की जॉच
- दूरबीन द्वारा बच्चेदानी निकालने का ऑपरेशन
- दूरबीन द्वारा पित्त की पथरी निकालने का ऑपरेशन
- दूरबीन द्वारा नसबन्दी
- फिजियोथिरेपी की सुविधा
- Chemist, Digital X-ray, Ultrasound, Pathology, Phototherapy, Baby warmer, E.C.G, Ambulance

24X7 emergency available

With Best Wishes From :

K.K. Agarwal
9760817110
Factory : (0135)2723248
Resi. (0135)2726128

SWAD INDIA FOOD PRODUCTS

Manufacturer of All types of Namkeens & Milk Bread Toast

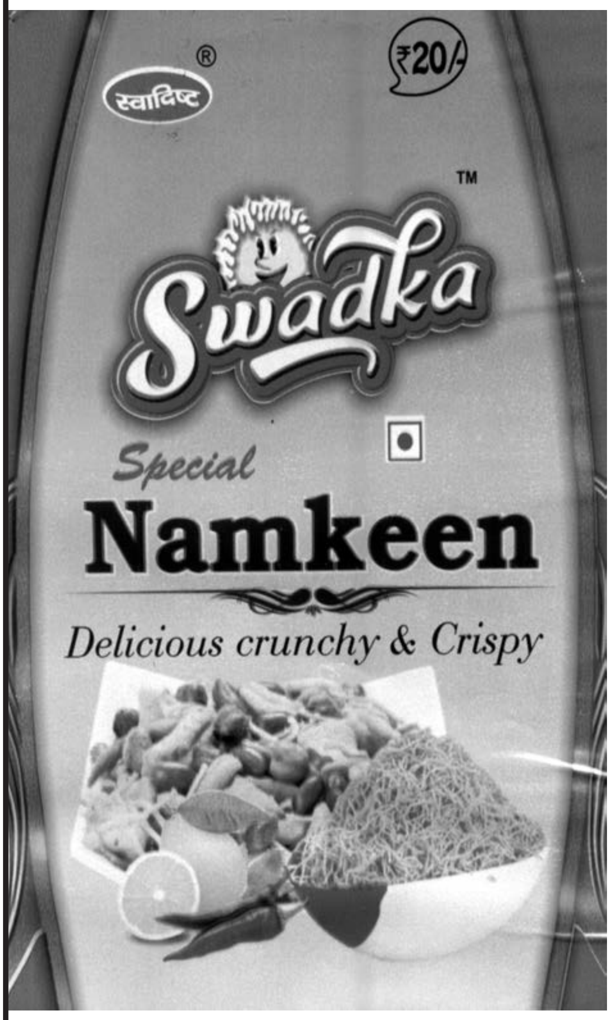

E-10 Govt. Industrial Estate,
Patel Nagar, Dehradun-248001

With Best Wishes From :

❖❖❖

SATYA PAL KRISHAN KUMAR

House of Quality Provisions

Specialist in : **SOUTH & BENGAL PRODUCTS**

Paltan Bazar, Dehradun-248 001
Ph. : 0135-2717286, 2710721 (S), 2727704 (R)

⌘⌘⌘⌘

Chidiyaa

Cotton Hand Block Printed, Kurtis, Skirts,
Bedsheets, Suits etc.

Vee Pee Craft

32 (154) Paltan Bazar, Dehradun-248 001

Prop.–**VANDANA**
9411515850
website : www.chidiyaa.com

With Best Wishes From :

SACHDEVA STORES

Distributors & Stockist of all Electrical
&
Household Consumer Goods

❖❖❖

Prop.—Vijay Sachdeva & Dhirender Sachdeva

9412438088, 9259586076,

0135-2652316 (Shop), 0135-2767748 (Resi.)

Email : vjms8088@gmail.com

54, Paltan Bazar, Dehradun-248001 (UK)

With Best Wishes From :

PANWAR SANITARY & HARDWARE STORE

Auth. Dealer :

ASIAN COLOUR WORLD

ACC CEMENT, JK WHITE CEMENT, JK WALL PUTTY,
KAJARAIA CERAMIC TILES & T.S. BAR

Acro Paints
Voice Of Colour

ACC

JK WHITE CEMENT

asianpaints
Colourworld

Kajaria

Contact :

D.S. PANWAR

**Haridwar Bye Pass Road,
Opp. Mahindra Showroom,
Ajabpur Khurd, Dehradun (U.K.)
9927065377, 0135-2532708 (Shop)**

वैदिक आश्रम तपोवन देहरादून में

योग, प्राकृतिक चिकित्सा, यज्ञ चिकित्सा, वनस्पति चिकित्सा से सम्पूर्ण शरीर का

काया-कल्प शिविर

20 से 26 मई 2016

सात दिवसीय शिविर में भोजन, आवास व चिकित्सा की उचित व्यवस्था है। शुल्क मात्र- रु० 3000/- स्थान सीमित हैं इसलिए पंजीकरण तुरन्त कराएँ।

इस शिविर में पेट सम्बन्धी सभी रोगों, ब्लड प्रेशर, हृदय रोग, चर्म रोग, गुर्दे व लीवर के रोग, मोटापा, दुबलापन, शुगर, अर्थराइटिस, कोलाइटिस, स्पोंडिलाइटिस, पुराना सिरदर्द, किसी भी प्रकार के माइग्रेन, मानसिक रोग, अनिद्रा, डिप्रेशन आदि अनेकों रोगों का सफल उपचार किया जायेगा।

निर्देश : अपने साथ दो तौलिये, टार्च, मच्छरदानी, एक गिलास, एक चम्मच, एक डायरी तथा पेन लेकर आयें

संचालक : योगाचार्य डॉ. विनोद कुमार शर्मा

सम्पर्क :

whats app-+91 7500191719, 9319317007, 9412051586
Facebook : nirogbharat, E.Mail : nirogbharat@gmail.com

सूचना

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर दिनांक 5 जून से 12 जून 2016 तक जम्मू शहर में आयोजित किया गया है। 14 वर्ष से अधिक आयु की केवल वो वीरांगनाएं जिन्होंने पहले भी कम से कम दो शिविरों में भाग लिया हो इस शिविर में भाग ले सकती हैं। शिविर में भाग लेने के लिए निम्न पदाधिकारियों से सम्पर्क करके अपना रजिस्ट्रेशन 30 मई 2016 तक अवश्य करवा लें। शिविर शुल्क 200/- रु० प्रति शिविरार्थी होगा।

प्रधान संचालिका	*संचालिका*	*सचिव*	*कोषाध्यक्ष*
साध्वी डॉ० उत्तमा यति	मृदुला चौहान	आरती खुराना	विमला मलिक
9672286863	9810702760	9910234595	9810274318

De Bono

Saturn Series

CPU Holder

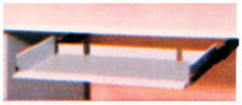

Slide out Keyboard tray

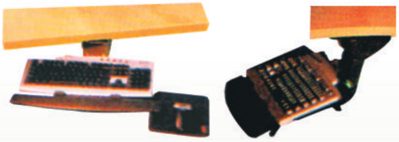

Swivel and Tiltable keyboard tray

Wire Management

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary: Any infringement is liable for prosecution.

ISO:9001 DNV CERTIFIED

DE BONO FLEXCOM (INDIA) LTD.: Kukreja House, 1st Floor, 46, Rani Jhanshi Road, New Delhi-110055

Ph : 011-23540721. 23533936 **Fax :** 23533944 **Email :** debono@debonoindia.com

E-mail : delite@delitekom.com

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2015-17 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

MUNJAL SHOWA मुंजाल शोवा

मुंजाल शोवा लिमिटेड देश में टू व्हीलर / फोर व्हीलर उद्योग में सभी प्रमुख ओ.ई.एम. के लिए शॉक एब्जोर्बर, फ्रंट फोर्क्स, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कंवेंशनल) और गैस स्प्रिंगो का सबसे बड़ा निर्माता है। निर्मित उत्पाद, गुणवत्ता और सुरक्षा के कड़े मानों के अनुरूप होते हैं। कम्पनी के उत्पाद बाधामुक्त, आरामदेह, चिरस्थायी, विश्वसनीय और सुरक्षित यात्रा के लिए जाने जाते हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, टीएस–16949, आईएसओ 14001, ओ.एच.एस.ए.एस. 18001 और टीपीएम प्रमाणित कम्पनी है। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

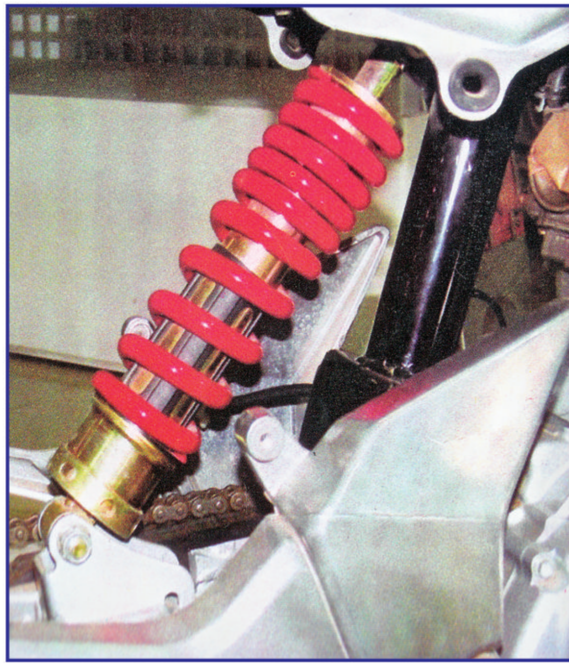

टीपीएम प्रमाणित कम्पनी

आईएसओ / टीएस–16949–2002 प्रमाणित

आईएसओ–14001 एवं ओएचएसएएस–18001 प्रमाणित

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

- हीरो मोटोकोर्प लिमिटेड
- मारुती सुजुकी इन्डिया लिमिटेड
- होन्डा कार्स इन्डिया लिमिटेड
- होन्डा मोटर साइकल एवं स्कूटर इन्डिया (प्र0) लिमिटेड
- इन्डिया यामहा मोटर (प्र0) लिमिटेड

हमारा उत्पादन

स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
शॉक एब्जॉर्बर्स
फ्रन्ट फोर्कस
गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

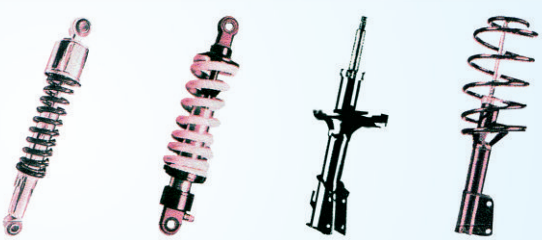

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं0 9–11, मारुति इन्डस्ट्रीअल एरिया, गुड़गाँव। दूरभाषः 0124–2341001, 4783000, 4783100
प्लॉट नं0 26 इ एवं एफ, सेक्टर–3, मानेसर, गुड़गाँव। दूरभाषः 0124–4783000, 4783100
प्लॉट नं0 1, इन्डस्ट्रीअल पार्क–2, सालेमपुर गाँव, मेहदूद–हरिद्वार, उत्तराखण्ड दूरभाषः 0124–4783000, 4783100

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित। संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com